भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 34 अंक : 3	3.3.2011 गुरुवार (मार्च - अप्रैल)	शुल्क – प्रति अंक : ₹ 10.00 वार्षिक : ₹ 50.00

मेरे जीवनप्राण – आराध्य के अमृत उत्सव पर...

सौरभ - २७

सर्वप्रथम तो प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी के पवित्र चरणारविंद में अंतर से नतमस्तक होकर कोटि-कोटि प्रणाम... धन्यवाद! धन्यवाद! कि उन्होंने प.पू. बापा की अनुवृत्ति-अभिप्राय को जान कर, अपमान-गालियाँ सहते हुए, बहनों के लिए भगवान भजने की नई क्षितिज खोल दी... इतना ही नहीं, नई करामात – चाबियाँ बता कर, उस रास्ते पर चलने के लिए 'अध्यात्म' का पथ भी सरल कर दिया। गुणातीत समाज का कोई भी मुक्त इनका यह ऋण कभी भी चुका नहीं पाएगा...

तेरे संकल्प में अमोघ है बल, दर्शन मात्र से वृत्ति जाए पिघल...

हम सभी ने भगवान श्री कृष्ण के बारे में सुना है कि उन्होंने गोपियों की सुधबुध भुला कर उन्हें अपने पीछे लगा रखा था। **गोपियाँ उनसे कामभाव से ही जुड़ी थीं, पर श्री कृष्ण निर्गुण विभूति थीं, तो गोपियाँ भी निर्गुणभाव को पा गईं; और आज वे वेद की श्रुतियों के रूप में पूजी जाती हैं!** अब तक यह बात सिर्फ सुनी थी, पर मैंने तो इसे अपने जीवन में साकार देखा...

पूर्वाश्रम में घर के माहौल के कारण मेरा स्वभाव खूब ही चिड़चिड़ा रहता था... हमेशा भीतर में उद्वेग, बैचेनी, उदासीनता और सूनेपन का ही अहसास होता। एक बार मैं अपना रिज़ल्ट जानने के लिए फोन करने मंदिर आई थी। पर, यहाँ प.पू. गुरुजी के दर्शन करते ही निराली शांति मिली... मानो कई जन्मों की खोई हुई कोई चीज हासिल हो गई! और... साधु के नियम-मर्यादा में रहते हुए भी, मुझे निःस्वार्थ प्यार देकर, उन्होंने मेरे अंतर में भगवान भजने की एक ललक जगा दी! उनका निरपेक्ष अपनापन मेरी आत्मा को आकर्षित

करता... एक खिंचाव-आकर्षण बना रहता। चित्तपट्टी पर बस प.पू. गुरुजी की मूर्ति ही छाई रहती और प.पू. गुरुजी के दर्शन करने-उनकी एक झलक मात्र देखने की ललक मन में लगी रहती। घर पर रहते हुए भी चारों ओर बस प.पू. गुरुजी ही दिखाई देते। यूं भगवान श्री कृष्ण के प्रति गोपियों के मन में जैसा आकर्षण व सम्मोहन भाव के बारे में मैंने सुना-पढ़ा था, वैसा ही चुंबकीय आकर्षण और जादू मैंने प.पू. गुरुजी में एहसास किया।

काकाजी और गुरुजी मेरे जीवन में न आए होते तो मेरा क्या होता, यह सोचते ही काँप उठती हूँ। घर की परिस्थितियों के कारण मेरे जीवन में प्यार का अभाव ही था। प.पू. काकाजी-प.पू. गुरुजी ने मेरे जीवन में आकर अपने निःस्वार्थ विशुद्ध, सच्चे निर्व्याज प्रेम से मेरी आत्मा की तृप्ति करा दी... माँ, बाप, भाई, बहन, दोस्त, हमसफ़र, हरेक रिश्ते की कमी पूरी कर दी। सुना था कि **मोह-माया के बंधन**, आसक्तियाँ बहुत मुश्किल से छूटती हैं, छूटना नामुमकिन होता है; परंतु मेरे अनुभव से कहूँ तो **यदि हम सिन्सियरली ऐसी गुणातीत विभूति से जुड़े हों, तो** वे स्मृतियाँ दे-देकर, लाड़ लड़ाते-लड़ाते, कभी प्यार से तो कभी डाँट कर, टोकते हुए भी, **हंसते-खेलते-कब इन बंधनों से मुक्त करवा देते हैं, इसका पता ही नहीं चलता।** पिछले २८ सालों में स्वप्न में भी कभी माँ-बाप, भाई-बहन की ममता ने मुझे परेशान नहीं किया... ऐसी गुणातीत विभूतियों का हमारी स्वप्नसृष्टि पर भी कितना नियंत्रण होगा!

साथ ही, मैंने भगवान भजने का निर्णय लिया, तब दिल्ली जैसी जगह में मुझे कहाँ रहना, वो तो एक प्रश्न था। पर, उस समय नए-नए ही परिचय में आए **प.भ. विजयबाबू** एवं **सौ. मधु जीजी** ने प.पू. गुरुजी की आज्ञा से मुझे अपनी बहन-लड़की की तरह अपने घर पर रख कर प.पू. काकाजी के प्रति तो गुरुभक्ति अदा की ही, साथ ही सत्संग से अपनेपन-खानदानी व संस्कारों का परिचय दिया... समाज का विरोध भी सहन किया। उनका यह एहसान मैं कभी भुला नहीं पाऊँगी।

सच, इस रास्ते पर चलने की मेरी न तो कोई हैसियत-ताक़त थी और न ही ऐसी कोई बरकत! मैं दिल से मानती हूँ कि प.पू. काकाजी और प.पू. गुरुजी की कृपादृष्टि से ही मैं यहाँ आ पाई। मुझे तो स्वामिनारायण संप्रदाय के विषय में कोई जानकारी ही नहीं थी। मैंने कभी स्वामिनारायण का नाम भी नहीं सुना था। घर में राम, कृष्ण, वैष्णो देवी, हनुमानजी की मूर्तियाँ थीं! उनके आगे कभी-कभी दो हाथ जोड़ देना, बस– इतनी ही प्रभु के प्रति आस्था थी! धरती पर **'प्रगट प्रभु'** भी होते हैं और अपनी मूलभूत प्रकृति का रूपांतर भी हो सकता है–ऐसा कभी सपने में भी नहीं सोचा था।

वर्षों पुराने अपने जीवन के विषय में सोचती हूँ कि हठ, मान, ईर्ष्या के भाव मुझ पर हावी हो जाते थे और तब मैं कैसा बर्ताव करती थी व अब किस प्रकार, प.पू. गुरुजी कृपा करके मेरे स्वभाव का परिवर्तन करके, मेरे मन, मेरी वृत्तियाँ, मेरी इन्द्रियों व अन्तःकरण के प्रवाह को प्रभु ओर मोड़कर मुझे आगे ले जा रहे हैं।

प.पू. काकाजी की परावाणी में कई बार सुना है कि सच्चे संत मिलने बहुत कठिन हैं। हम यह सब सुनते तो हैं, पर इन शब्दों की गहराई को विचारते नहीं।

वाकई, **मेरा अहोभाग्य है कि प.पू. गुरुजी के जीवन की सच्चाई को नज़दीक से निहारने का मुझे सौभाग्य मिला। प.पू. गुरुजी का आंतरिक व बाहरी जीवन एक जैसा...** वे जो बोलते हैं, जैसा बोलते हैं, वह सिर्फ बोलने के लिए ही नहीं; बल्कि, अपने वर्तन से वैसा जीकर बताते हैं। **तनिक-भी दंभ या बनावट नहीं।**

पिछले २७-२८ सालों से प.पू. गुरुजी के जीवन पर जब भी नज़र डालती हूँ, तो उनकी प.पू. काकाजी के प्रति गुरुभक्ति, उनके वचनों में दृढ़ विश्वास, बेमिसाल प्रीति, उनके सिद्धान्तों को जीवंत रखने की चाहना... निखालस, कपटरहित, पारदर्शी जीवनशैली – ये सब मुझे आश्चर्य में डाल देते हैं। कभी शून्यमनस्क कर देते हैं, तो कभी अहोहोभाव आ जाता है कि – ऐसे गुणातीतभावना वाले साधु की गोद में काकाजी महाराज ने मुझे रख दिया! और... प.पू. गुरुजी के प्रति दिल और दिमाग़ नतमस्तक हो जाता है...

प.पू. गुरुजी पर प.पू. काकाजी के सिवा अन्य किसी व्यक्ति, शक्ति, पदार्थ का प्रभाव पड़ा हो ऐसा मैंने कभी नहीं देखा। एक बार तो प.पू.गुरुजी ने स्वयं कहा कि किसी पर चाहे सोने के छत्तर झूल रहे हों और दोनों ओर लक्ष्मीजी और राधाजी चामर झुला रहे हों, तब भी मुझ पर इसका प्रभाव नहीं पड़ सकता। अपने जीवन से ऐसी गुरुनिष्ठा का आदर्श इन्होंने हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है।

इससे भी अधिक बहुत ही सरल भाषा में अध्यात्म एवं व्यवहार के कई रहस्य वे बताते रहते हैं। कथावार्ता के दौरान परोक्ष के प्रसंग वे बताते हैं, पर हमें मिले प्रगट स्वरूप पर लगाकर हम ऐसा जी पाएं, वही उनकी भावना रहती है। उन्होंने आशीर्वचन के दौरान कई बार रामायण की उर्मिला का उदाहरण देकर बताया है कि श्री राम के वनवास से लौटने पर उनके राजतिलक की विधि के पश्चात्, श्री राम सभी को उपहार रूप कुछ मांगने को कहते हैं। तब उर्मिला मांगती है कि जन्मोंजन्म मुझे रघुकुल में रहने का सौभाग्य मिले... जबकि सबसे अधिक कष्ट-कसनी तो उर्मिला ने ही सही थी, फिर भी उसने यह मांगा! दूसरी ओर – प.पू. गुरुजी की बातों में हम सभी ने बार-बार सुना है –

काकाजी-पप्पाजी जैसी विभूतियाँ उनके जीवन में आईं और इस गुणातीत समाज में रहने का जो सौभाग्य उन्हें मिला, वही उनके जीवन की परम धन्यता है।

अर्थात् उर्मिला का प्रसंग केवल सभा में बताने के लिए नहीं बल्कि; अपने जीवन में भी वे उसी शैली को लेकर चल रहे हैं।

दिल्ली जैसी जगह पर, जहाँ स्वामिनारायण के नाम तक को कोई नहीं जानता था, काकाजी के वचन से, गुरुजी आए और...रहे! जब-जब मैं यह बात सोचती हूँ, मुझे कंपकंपी आ जाती है और दिल से एक आवाज़ निकलती है कि गुरुजी की यह कैसी बेमिसाल गुरुभक्ति!

कई बार गुरुजी को सबके सामने झुकते हुए देखती हूँ, तो सोचने लगती हूँ कि क्यों गुरुजी सबके सामने इतना झुक रहे हैं। पर जब परिणाम देखते हैं, तो लगता है कि एकमात्र प.पू. काकाजी को जीवंत रखने के लिए, प.पू. काकाजी की सेवारूप – भक्तिरूप ही यह सब प.पू. गुरुजी करते हैं।

प.पू. गुरुजी का एक भी चरित्र ऐसा नहीं होगा जब उन्होंने अपने आपको आगे रखने का प्रयास किया हो। बस, 'प.पू. काकाजी और गुणातीत स्वरूपों की पहचान किस तरह बनूँ'– यही उनका निरंतर श्रम है। **प.पू. काकाजी के प्रति एकनिष्ठ, फिर भी सर्वदेशीय साधु! सभी गुणातीत स्वरूपों में उन्हें ही निहार कर उनकी आज्ञा अहोहोभाव से मानने का इश्क और स्वामीसेवकभाव!** उनकी ही पहचान करा देने का एकमात्र उद्यम...

प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी के जीवन को खूब नज़दीक से निहारा है, उनका अभिप्राय, सिद्धान्त, वे जानते हैं; इसलिए **वे कई बुनियादी बातों पर वे कभी अपनों से भी एकदम अड़े हुए, कड़े जैसे, अडिग दिखाई पड़ते हैं।** स्पष्टवक्ता... साफ–साफ निखालसभाव से वे कह देते हैं। कई बार उनका बोलना कड़वा लगता है; तब ही तो हम उन्हें अंडरएस्टिमॅट भी कर लेते हैं। पर यदि तटस्थभाव से सोचें, तो उनकी बात में खूब सच्चाई होती है।

पल-पल मेरे चैतन्य का जतन किया तुमने...

जैसे कि पहले भी बताया है कि सत्संग के शुरुआत के दिनों में प.पू. गुरुजी के प्रति आर्कषण के वश, मुझे कुछ सुधबुध ही नहीं रहती थी। जिसके फलस्वरूप उनके दर्शन के लिए मैं हमेशा लालायित रहती...

* एक बार प.पू. गुरुजी मुबंई जा रहे थे। सुबह साढ़े चार बजे की ट्रेन से निकलना था... मुझे विचार आया कि उनके स्टेशन जाने से पहले मैं उनके दर्शन कर आऊँ। घर में विरोध होने के कारण मैं रात को करीब तीन बजे किसी को बताए बिना मंदिर जाने के लिए निकली। रास्ते में दो युवा मिले, तो उन्होंने मेरा रास्ता रोका। डर के मारे मेरे भीतर तो 'स्वामिनारायण–स्वामिनारायण' रटन अपने आप शुरू हो गया। इतने में ही मेरे माथे पर लगी बिन्दी में से प्रकाश जैसा निकला। उस प्रकाश में ही मैंने शराब से धुत उन दोनों युवाओं की लाल आँखें देखीं।

  आश्चर्य की बात कि इस प्रकाश के बाद वे दोनों युवा मेरे आगे-आगे चलने लगे और उनके पीछे-पीछे चल कर मैं आख़िर मंदिर के गेट पर पहुँच गई। मुझे वहाँ छोड़ कर वे दोनों कुछ कहे बिना वापिस चले गए। मैं मंदिर के हॉल (ए-१०३ पुराना मंदिर) में दाखिल हुई, तब प.पू. गुरुजी पूजा कर रहे थे। मुझे काढ़े का प्रसाद भिजवाते हुए प.पू. गुरुजी ने सेवक से पहले यही कहलवाया– ***गुड्डी को पूछो, आज खूब रक्षा हो गई न!*** तब मुझे '**स्वामिनारायण मंत्र**' की ताक़त और प.पू. गुरुजी के अंतर्यामी स्वरूप का दर्शन हुआ...

* १९८३ में दिल्ली–कृष्णा नगर में रहते पुराने जोगी प.भ. हरिरामजी के निवास स्थान के आस-पास संक्रांति की भिक्षा मांगने के लिए प.पू. गुरुजी गए थे। उनके पीछे हम कुछ बहनें भी चल रही थीं, ताकि यदि घर में से कोई स्त्री भिक्षा देने आए तो वह हम ले सकें। भिक्षा मांगने के लिए लगातार अलख जगाने के कारण मेरी आवाज एकदम बंद हो गई। तुरंत ही वहीं के एक डॉक्टर को दिखाया। उन्होंने बताया कि

इनके गले के साऊन्ड बॉक्स पर तो गाँठें हो गईं हैं और इसमें ऑप्रेशन भी सफल नहीं रहेगा। ये बहनजी अब पूरे दिन में दस-पंद्रह वाक्यों से ज्यादा नहीं बोल पाएंगी।

मुझे तो यह बात सुनते ही खूब रोना आया कि *मैं अब सत्संग की (महिमा की बातें करने की) सेवा नहीं कर सकूँगी।* थोड़े दिन के बाद प.पू. काकाजी दिल्ली आए। उन्हें सारी बात पता चली, तो उन्होंने मुझसे कहा– *अरे! गुड्डी तुम्हें तो अभी बहुत सेवा करनी है। चिंता मत करो, कुछ नहीं होगा और सब ठीक हो जाएगा। बस रोज नमक वाले गरम पानी के गरारे करना।*

यूँ बोलते-बोलते मेरे गले पर हाथ फेरा। बस, उस दिन से मैं प.पू. काकाजी की कृपा से बोलने की सेवा कर पाती हूँ और रोज गरारे करते हुए प.पू. काकाजी की स्मृति सहज ही होती है।

इसी तरह–जैसा कि मेरे घर से आने पर प.पू. काकाजी ने मंदिर में मेरे सिर पर हाथ रख कर कहा था कि ***'तेरी सारी जिम्मेदारी मेरी है'***; इन शब्दों ने भी प.पू. गुरुजी द्वारा बार-बार याद कराए जाने से मुझे अनेक ज्वार-भाटों के दौरान खूब बल दे दिया है... हल्का फूल बना कर निश्चिंत किया है।

* प.पू. गुरुजी अपनी मूर्ति देने के बारे सालों तक खूब स्ट्रीक्ट रहे... प.पू. काकाजी के स्थूल शरीर को छोड़ने के बाद जो भी नए चैतन्य संबंध में आते, वे स्वाभाविक रूप से प.पू. गुरुजी के साथ जुड़ जाते... उन्हें प.पू. काकाजी के स्थूल रूप से दर्शन नहीं हुए थे, सो सहज ही प.पू. गुरुजी की मूर्ति मुझसे मांगते... एक बार मैंने प.पू. गुरुजी को इस बारे में कहलवाया, तब प.पू. गुरुजी ने अपनी मूर्ति देने की बात पर अत्यधिक नाराजगी व्यक्त की। मुझे रोना आ गया। फिर रात को मेरे सपने में प.पू. काकाजी आए और बोले–

  गुड्डी! तुम क्यों रोता है। तुम्हारी बात तो सही है... मैं अभी गुरुजी से जाकर मूर्ति देने के बारे में बात करता हूँ कि यह भी एक प्रकार से निर्मानीपन का मान है।

  ऐसा कह कर उन्होंने मेरे सिर पर हाथ फेर कर दिलासा दिया। अगले दिन सुबह ही प.पू. गुरुजी ने भी अपने सपने में प.पू. काकाजी के आने की बात चिट्ठी द्वारा लिख कर भेजी। मैं तो चकित रह गई कि हमें कैसी अमूल्य प्राप्ति हुई है, जो चैतन्यों की स्वप्नसृष्टि पर कब्जा कर चैतन्यों की प्रगति हेतु निरंतर प्रयत्नशील हैं!

* १९८१ में प.पू. काकाजी की आज्ञा से, मैं तकरीबन छः-सात महीने **पंजाब के सवद्दी गाँव में प.भ. धर्मपालजी** के यहाँ रही थी। एक बार मध्य रात्रि को छत पर खूब तेज प्रकाश में श्रीजी महाराज और मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी के दर्शन हुए। साथ ही प.पू. काकाजी और प.पू. गुरुजी भी थे। थोड़ी ही देर में श्रीजी महाराज की मूर्ति में प.पू. काकाजी लीन हो गए और मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी की मूर्ति में प.पू. गुरुजी लीन हो गए... यह अलौकिक दर्शन मानो मुझे ऐसी प्रतीति कराने के लिए ही था कि प.पू. काकाजी एवं प.पू. गुरुजी के रूप में साक्षात् श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज से मेरा संबंध हुआ है। और... प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी से ऐसा ऐक्य साधा है; फिर भी, प.पू. गुरुजी कभी भी

'स्वामीसेवकभाव' चूकते नहीं और यही कारण है कि उनकी हर एक क्रिया बस प.पू. काकाजी को केन्द्र में रख कर ही होती है। अरे! किसी को नई गाड़ी का नंबर तक भी देना हो, तो प.पू. काकाजी के किसी दिनाँक से संबंधित देते हैं।

* १९९४ में दिल्ली में प.पू. काकाजी के पुनीत चरणों से अंकित प्रासादिक भूमि पर जब हमारा मंदिर निर्मित हुआ और मूर्तिप्रतिष्ठा हुई... तब से आज तक जो भी मंदिर में आते हैं और प.पू. गुरुजी के दर्शन करते हैं, **बिना किसी अपवाद के** उनके मुँह से एक वाक्य अचूक निकलता है– ***'यहाँ बहुत शांति है।'*** प.पू. गुरुजी हमेशा कहते हैं कि *यह काकाजी की बदौलत है; आख़िरी बार प.पू. काकाजी इस साईट पर यकायक आकर बैठे, तब कुछ कर गए थे।* पर, प.पू. गुरुजी ने भी प.पू. काकाजी के आशीर्वादों को अध्धर झेला है, उन्हें जीवंत रखा है, तभी तो आने वाले हर व्यक्ति को यह प्रतीति होती है।

  सुबह पौने छः से रात के ११:३० तक के पूरे दिन के उनके क्रियाकलाप का हर पहलू निहारें, तो केवल काकाजी-काकाजी; रत्तीभर भी कॉन्सियसनेस नहीं कि मैं कुछ हूँ या मेरे द्वारा इतने बड़े-बड़े काम हो रहे हैं... सब कुछ काकाजी के आशीर्वाद से हो रहा है। कोई भी अपनी कोई प्रॉब्लॅम लेकर आए, तो बस भजन करो, पीछे काकाजी पुष्पसमाधि की परिक्रमा करो...

* १९९७ दिसंबर में प.पू. गुरुजी की बाई पास सर्जरी हुई। उस ऑप्रेशन के दौरान ब्रेईन के बाईं ओर हुए ब्लड क्लॉटींग के कारण शरीर का दायां हिस्सा सुन्न-सा हो गया। इसका ख्याल आते ही तुरंत मुंबई के हमारे आत्मीय **प.भ. डॉ. महेन्द्र मर्चंट** ने इस खराबी को संभाल लिया। फिर भी दायाँ हिस्सा थोड़ा कमज़ोर हो ही गया। हम सभी तो अंदर से अत्यंत दुःखी हो गए; क्योंकि ६० साल की उम्र में भी प.पू. गुरुजी को नवयुवक की भाँति अत्यधिक सक्रिय ही हमेशा हम सभी ने देखा था।

  पर, **प.पू. गुरुजी के मुँह से इतने सालों में कभी भी यह नहीं सुना कि प.पू. काकाजी ने मेरे साथ ऐसा क्यों किया? बल्कि ऐसा ही कहते सुना कि काकाजी को अब मेरी सेवा यूँ लेनी होगी और... उन्होंने जो किया होगा, जरुर मेरे हित में किया होगा...**

  धुलेन्डी के त्यौहार पर प.पू. गुरुजी सभी भाइयों के पूरे मुँह पर खूब अच्छी तरह चंदन लगाते थे। ऑप्रेशन से हुई तकलीफ के कारण प.पू. गुरुजी के दाएं हाथ का संतुलन नहीं रह पाता था। तब भी धुलेन्डी के दिन सभी भाइयों के पूरे मुँह पर वे खूब अच्छी तरह चंदन लगाते रहे। सो, संतों ने प्रार्थना की कि आप केवल टीका कर दिया करें, बाकी पूरे चेहरे पर चंदन हम लगा दिया करेंगे; जिससे आपके हाथ को थकान न हो। तब, प.पू. गुरुजी बोले– *नहीं, मैं ही लगा दूँगा...* बाद में उन्होंने अपनी भावना बताई–

  'इस हाथ से सभी मुक्तों को चंदन लगाऊँगा, तो प.पू. काकाजी मेरा हाथ उतना ज्यादा ठीक रखेंगे।'

  ऐसे प्रसंगों से मुझे बहुत बार विचार आता है कि अगर प.पू. गुरुजी की जगह पर मैं होती, तो कितने उलाहने, कितने नॅगेटिव विचारों के बवंडर में खो जाती... **विपरीत संजोगों में भी अपने गुरु के प्रति अडिग विश्वास, निष्ठा, श्रद्धा, बलभरे विचारों में रहना–प.पू. गुरुजी के जीवन से सीखने को मिलता है।**

प.पू. काकाजी के स्थूल शरीर छोड़ने के बाद प.पू. गुरुजी ने क्षण मात्र के लिए भी हमें प.पू. काकाजी की कमी महसूस नहीं होने दी। बल्कि, हमेशा ऐसा ही एहसास हुआ है कि वे पल-पल अभी भी हमारे साथ हैं। और... हमें यह एहसास हो भी क्यों न? **१९८६ जनवरी में** हरिधाम में 'गुणातीत द्विशताब्दी' मनाई गई थी। हम मंदिर के हॉल में ठाकुरजी के दर्शन करने गए थे। तभी पता चला कि नीचे से प.पू. काकाजी और प.पू. गुरुजी गुज़र रहे हैं। सो, हम दर्शन करने गए। उसी समय प.पू. गुरुजी की छाती पर हाथ रखकर तीनों सूर्य एक हो जाने का प.पू. काकाजी आशीर्वाद दे रहे थे।

प.पू. पप्पाजी ने बाद में प.पू. काकाजी के इस जॅस्चर का रहस्य बताया था कि यह तो प.पू. काकाजी ने '*शक्तिपात*' किया था। तब ही इस बात की महिमा का ख्याल आया कि **अहो हो! इस अमूल्य मंगल क्षण के दर्शन करने का सौभाग्य महाराज ने मुझे दिया!**

स्थूल शरीर छोड़ने से करीब एक साल पहले पी.के. में प.पू. पप्पाजी ने भी जबरदस्ती प.पू. गुरुजी को अपने सोफे पर बिठाया था। वो दर्शन करने का सौभाग्य भी मुझे प्राप्त हुआ था। **प.पू. पप्पाजी का शायद मेरे लिए यह सांकेतिक मर्म लिए जॅस्चर था।**

प.पू. काकाजी की परावाणी में सुनते हैं तो प्रेमस्वामी, कोठारीस्वामी का नाम लेते-लेते प.पू. काकाजी का मुँह नहीं थकता, तो दूसरी ओर कई बार प.पू. गुरुजी को भरी सभा में डी-ग्रेड करते दिखाई पड़ते, जिसके कारण प.पू. गुरुजी को कई गलत भी समझते– अंडरएस्टीमेट भी कर लेते। पर, उस समय प.पू. गुरुजी ने अपने दिल और दिमाग़ से कितनी लड़ाई ली होगी कि प.पू. काकाजी के प्रति उनकी प्रीति में ज़रा भी फर्क नहीं पड़ा और आख़िरकार प.पू. काकाजी भी होलसोल उनके हो गए हैं... तभी तो चैतन्यदर्शी **प.पू. पप्पाजी** ने कहा था–

काकाजी के अग्नि संस्कार के बाद गुरुजी ने जो चीख मारी थी, तब काकाजी गुरुजी में समा गए!

प.पू. काकाजी के अंतर्धान होने के बाद जब कई मुक्तों ने भी प.पू. काकाजी द्वारा अंतिम दिनों में कही बातों को दोहराया, तब समझ में आया कि प.पू. काकाजी तो हमें पहले से ही संकेत दे रहे थे कि प.पू. गुरुजी के रूप में मैं हमेशा तुम्हारे पास ही हूँ।

जैसे, **पंजाब वालों** को कहा था– ***अब मुझे मिलना हो, तो दिल्ली आना।***

वैसे ही १९८५ दिसंबर में दिल्ली के अंतिम दौरे के समय **सौ. मंजुलाबेन पटेल** के घर पधरामनी की, तब जाते हुए बोले–

मैं भले ही अंतर्धान हो जाऊँ, पर आप लोगों के बीच में यहाँ रहूँगा।

कईयों ने तो प.पू. काकाजी के स्थूल रूप से दर्शन भी नहीं किए, पर आज... प.पू. गुरुजी के पल-पल के जीवन एवं वर्तन को देखकर हरेक को लगता है कि जब गुरुजी ऐसे हैं, तो उनके गुरु काकाजी कैसे होंगे! **अपने गुरु का परिचय अपने वर्तन से देना, यही शिष्य के जीवन की परम सार्थकता है न!**

और... जैसे श्रीजी महाराज ने कहा था कि जूनागढ़ के हम जमानती हैं, वैसे ही प.पू. काकाजी वाकई दिल्ली मंदिर के जमानती बने हैं।

सर्वदेशीयता को रख स्वरूपों का बना प्यारा...

स्थूल रूप से प.पू. काकाजी विराजमान थे और दिल्ली आते-जाते थे, तब इन्होंने सारे स्वरूपों की अत्यधिक महिमा गा-गा कर हमारे भीतर में भर दी थी–जबकि प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, पू. ज्योति बहन, प.पू. साहेब, प.पू. दिनकरभाई वगैरह तो यहाँ अधिकतर आते भी नहीं थे। प.पू. काकाजी के स्थूल शरीर छोड़ने के बाद प.पू. गुरुजी ने वही रीति-नीति सिद्धांत जारी रखा है।

इन स्वरूपों को कैसे राजी करें, यह सहज ही प.पू. गुरुजी के भक्तिभरे जीवन से सीखने को मिलता है। वाकई, प.पू. गुरुजी में **भक्ति भरे दिल** और **दिमाग़** का अद्‌भुत समन्वय है।

* सालों पहले प.पू. काकाजी ट्रेन से दिल्ली आ रहे थे। दिल्ली बॉर्डर पर कोई आंदोलन के कारण ट्रेन को मथुरा पर रोके रखने की खबर प.पू. गुरुजी को मिली। सो, तुरंत ही प.पू. गुरुजी ने मथुरा स्टेशन पर गाड़ी भिजवा दी, ताकि ट्रेन लेट होने की परेशानी प.पू. काकाजी को झेलनी न पड़े और आसानी से वे दिल्ली पहुँच जाएं। प.पू. गुरुजी की इस सूझ और भक्ति से प.पू. काकाजी तब बहुत प्रसन्न हुए दिखाई पड़े थे। वर्ना, देखा जाए तो ऐसी परिस्थिति में तो प.पू. काकाजी स्वयं ही समझते कि जब ट्रेन रोक रखी है, इसमें सेवक भी क्या कर सकेंगे?

* एक बार प.पू. पप्पाजी दिल्ली आने वाले थे। उनके रहने की व्यवस्था प.भ. पुरी साहब के घर पर की गई थी। प.पू. गुरुजी ने वहाँ की सीढ़ी के स्टॅप्स गिनने के लिए बहनों को खास कहलवाया और खुद भी बताया कि देखना, १३ सीढ़ियाँ होंगी। उनकी आज्ञा से बहनें पुष्टि करने गईं, तो वाकई १३ सीढ़ियाँ ही थीं। हम भी कई बार प.भ. पुरी साहेब के घर गए होंगे, पर क्या कभी ऐसा ख्याल किया होगा?
  इसी प्रकार प.पू. पप्पाजी को दिल्ली होते हुए हरिद्वार जाना था। तो, अगली रात को प.पू. गुरुजी खुद स्टेशन गए और ट्रेन में प.पू. पप्पाजी के बैठने की सीट कम्फर्टेबल है या नहीं, स्वयं चॅक कर आए!

* प.पू. स्वामिजी जब भी दिल्ली मंदिर आने वाले हों, तो उनके लिए बैठने के सोफे पर पहले खुद बैठ कर देखते हैं कि सीट या इसकी हाईट प.पू. स्वामिजी के लिए आरामदायक है या नहीं।

* गुणातीत स्वरूपों को अर्पण करने के लिए बहनें फेन्सी हार बनाती हैं। काफी शुरुआत में ही एक बार प.पू. गुरुजी ने कहलवाया था कि हार का पिछला हिस्सा भले दिखाई नहीं देता, पर स्वरूपों की देह को तो वही छूता है। तो, वह हिस्सा भी एकदम सॉफ्ट होना चाहिए। साथ ही हार का वह भाग जो गर्दन को छूता है, वहाँ सिर्फ डोरी नहीं होनी चाहिए, बल्कि साटन के सॉफ्ट कपड़े में रुई भरकर उसका गला बनाना चाहिए, ताकि वह गर्दन को चुभे नहीं।

* प.पू. पप्पाजी एक बार प.पू. गुरुजी के कमरे में रुके हुए थे। रात को करीब डेढ़ बजे प.पू. गुरुजी ने जब कमरे की लाइट ऑन देखी, तो तुरंत कमरे की ओर भाग कर गए कि प.पू. पप्पाजी को कुछ चाहिए होगा... प.पू. पप्पाजी वाकई फाँकी लेने के लिए जागे थे। सच, भक्तिभरा दिल और जाग्रत, सुषुप्ति, स्वप्न-तीनों अवस्थाओं में यही भाव कि मैं सेवक, मैं दास–यही तो गुणातीत अवस्था है!

हम सभी जानते हैं कि ताड़देव में प.पू. काकाजी गुरुहरि योगीजी महाराज की प्रसादी के सोफे पर आख़िर तक बैठते रहे। इसी प्रकार पिछले ३० साल से प.पू. गुरुजी भी प.पू. काकाजी की प्रसादी का सोफा ही इस्तेमाल करते हैं, जबकि कइयों ने उनकी शारीरिक कम्फर्ट के मुताबिक उन्हें अन्य सोफा बनवा कर देने की कई बार बात भी की, परंतु इन्होंने स्पष्ट मना कर दिया और अपनी लाक्षणिक शैली में कहते भी हैं–

इस सोफे पर तो मेरा बाप बैठा है, इससे बढ़ कर मेरे लिए कौन-सा कम्फर्टेबल रहेगा?

ये बातें छोटी-छोटी हैं, पर भक्तिभरे दिल के प.पू. गुरुजी के ऐसे कई जॅस्चर्स मुझे खूब स्पर्श कर जाते हैं और सोच में डाल देते हैं कि स्वरूपों के दर्शन, सेवा, समागम की ऐसी गरज होनी चाहिए। स्वामीसेवकभाव कैसा हो–यह पल-पल प.पू. गुरुजी के जीवन से ही सीखने को मिलता है।

हमारे यहाँ गुणातीत समाज के हर एक केन्द्र में श्रीजी महाराज से लेकर अब तक के गुणातीत स्वरूपों के महिमा के श्लोक बोले जाते हैं... हर शिष्य की यह एक सहज चाह होती है कि हमारे गुरु का श्लोक भी बोला जाए... प.पू. गुरुजी से इस बारे में प्रार्थना की, पर प.पू. गुरुजी ने मना ही कर दिया... थोड़ी देर के लिए मन में चुभ गया, पर जब इसके बारे में गहराई से सोचा, तो एहसास हुआ कि असल में तो प.पू. गुरुजी स्वयं जीवन जीकर हमें 'स्वामीसेवकभाव-दासत्वभक्ति' का दर्शन करा रहे हैं...

* पिछले वर्ष मंदिर के हॉल का उद्घाटन हुआ। १९५४ से सत्संग के इतिहास के सिर्फ साक्षी ही नहीं, बल्कि अंगभूत प.पू. गुरुजी ने, अक्षरपुरुषोत्तम संस्था एवं गुणातीत समाज के हर एक केन्द्र के उत्थान के लिए प.पू. काकाजी द्वारा किए गए परिश्रम का, हॉल में भलीभाँति दर्शन करवाया है।

  प.भ. हृदय की शादी के निमित्त दिसंबर के पहले सप्ताह में प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई, पू. घनश्यामभाई एवं पू. गिरीशभाई दिल्ली-मंदिर आए थे। उन्होंने खूब अच्छी तरह हॉल देखा। हॉल में एक जगह प.पू. काकाजी के साथ प.पू. दिनकरभाई एवं प.पू. भरतभाई की मूर्ति लगी हुई है। उस पर प.पू. काकाजी के तीन हॅपीएस्ट डेइज़ का उल्लेख किया गया है। उसे पढ़ कर प.पू. भरतभाई सहज ही बोले कि प.पू. काकाजी ने तीन नहीं, चार हॅपीएस्ट डॅइज़ बताए थे। खूब महिमापूर्ण हृदय से प.पू. गुरुजी ने प.पू. भरतभाई के इस वचन पर गौर करते हुए, उनके जाने के बाद तुरंत ही तीन की जगह चार पॉइन्ट्स लिखवा कर, वह मूर्ति बदलवाने की कार्यवाही शुरू करवा दी और बदलवा भी दी!

  प.पू. गुरुजी के हृदय में प.पू. भरतभाई की कैसी महिमा होगी, उसका यह दर्शन है। इससे भी अधिक, प.भ. हृदय की शादी में आशीर्वाद देते हुए प.पू. भरतभाई ने प.पू. काकाजी की शताब्दी निमित्त १०० करोड़ मंत्र अर्पण करने के लिए रोज ४०० मंत्र लिखने की बात की। सो, प.पू. गुरुजी ने प.पू. भरतभाई की इस आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए स्वयं ४०० मंत्र रोज लिखने शुरू किए। साथ ही सभी मुक्तों को इसके पीछे का रहस्य भी बताया कि–

पू. भरतभाई जैसे सत्पुरुष की आज्ञा से मंत्र लिखेंगे, वह आत्मसत्ता रूप वर्ता कहा जाएगा।

कैसा 'स्वीकार' होगा इन्हें पू. भरतभाई का–भरतभाई की बातों का?

वाकई, प.पू. काकाजी के नक्शेकदम पर चलते हुए प.पू. गुरुजी सभी को साथ लेकर चलने का उपदेश दे रहे हैं।

यूं, अपने पल-पल के वर्तन से-गुणातीत साधुता से कैसे जिएं, यह प.पू. गुरुजी सिखाते हैं।

* मुझे टॅलबोन में चोट लगने के कारण बहुत तकलीफ रहा करती... १९९७ में प.पू. पप्पाजी डॉ. नीलम के साथ दिल्ली आए हुए थे। डॉ. नीलम दीदी की प.पू. पप्पाजी से बात हुई होगी। सो, प.पू. पप्पाजी ने प.पू. गुरुजी से कहा कि आनंदी को मैं अपने साथ विद्यानगर ले जाता हूँ। वहाँ अमदावाद में डॉक्टर को दिखा देंगे। प.पू. गुरुजी ने तुरंत हाँ कर दी और मुझे भी जाने के लिए कहलवाया। मैं प.पू. पप्पाजी के साथ अमदावाद गई। वहाँ डॉ. प्रबोध देसाई के क्लीनिक में प.पू. पप्पाजी स्वयं मेरे साथ डॉक्टर के यहाँ आए। डॉक्टर ने सारा चॅकअप करके टॅलबोन के नीचे का थोड़ा हिस्सा निकालने का निर्णय किया।

प.पू. गुरुजी को दिल्ली में यह खबर मिली। तब प.पू. गुरुजी ने एक फॅक्स भेजा, जिसमें लिखा था कि प.पू. पप्पाजी जैसी अखंड प्रभुधारक विभूति तुम्हें स्वयं अपने साथ यहाँ से ले गई है, तो निश्चिंतता से ऑप्रेशन करवा लेना। **वहाँ ऑप्रेशन थियेटर में स्वयं महाराज खड़े रहेंगे।**

हम तो अपनी मायिक बुद्धि के कारण साधु की कही बातों को दिलासा मात्र मान लेते हैं। आश्चर्य की बात कि अस्पताल में दाखिल होने के लिए मैं जैसे ही कमरा न. ३ में गई, वहाँ श्रीजी महाराज की बस्ट मूर्ति वाला कॅलेन्डर लगा था। मुझे तुरंत प.पू. गुरुजी की बात याद आई।

इससे भी अधिक, ऑप्रेशन थियेटर में मुझे एनेस्थीसिया देने के लिए टेबल पर लिटाया, तब सहज ही मेरी नज़र सामने की दीवार पर पड़ी। देखा तो – वहाँ हाथ में छड़ी लिए श्रीजी महाराज की लाइफ़-साइज़ खड़ी मूर्ति लगी थी... एक तरफ डॉक्टर इंजेक्शन लगा रहे थे, तो दूसरी ओर मेरा मन प.पू. गुरुजी द्वारा कहे शब्दों में डूबा था कि– ***महाराज स्वयं खड़े रहेंगे।*** साथ ही मैं इस सोच में डूब गई कि प.पू. गुरुजी के रूप में हमें क्या प्राप्ति हो गई!

इस प्रसंग के दौरान मुझे यह भी एहसास हुआ कि हम अपने मन की संकीर्णता के कारण गुणातीत स्वरूपों के प्रति भेददृष्टि पकड़े रखते हैं। पर, इन स्वरूपों में तो कोई फर्क है ही नहीं। प.पू. काकाजी यदि स्थूल रूप से विद्यमान होते, तो मानो वे तो चिंता करते ही; पर, प.पू. पप्पाजी ने भी 'गुणातीत ज्योत' की लड़की की ही तरह मेरी परवरिश की।

एक बार वचनामृत के आगे के पन्नों में श्रीजी महाराज की स्वाभाविक प्रकृति के बारे में पढ़ रही थी। तो उसमें श्रीजी महाराज के अत्यंत दयालु स्वभाव के बारे आया। स्वाभाविक है, हमारी वृत्ति तुरंत हमें मिले प्रगट स्वरूप के साथ ही जुड़ जाती है। प.पू. गुरुजी टी.वी. पर भी कोई बाढ़ का न्यूज़, किसी छोटे बच्चे को अगवा करने के बारे या कोई दुर्घटना के कारण मृत्यु इत्यादि देख लें, तो वे एकदम द्रवित हो उठते हैं। मंदिर में कोई अपनी समस्या या दु:ख की बात बता रहा हो या रो रहा हो, तो प.पू. गुरुजी की आँखें भी नम हो जाती हैं।

सो, मुझे लगता है कि प.पू. गुरुजी में गुरुहरि योगीजी महाराज, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी एवं प.पू. साहेबजी की जीवनशैली तो दिखाई पड़ती ही है, पर श्रीजी महाराज, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी, अनादि महामुक्त भगतजी महाराज और गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज का भी दर्शन होता है। किसी प्रसंग पर खूब दयालुता का, तो आध्यात्मिक शिस्त की किसी बात पर अत्यंत कड़क-गुस्सा ग्रहण की हुई मूर्ति का... सभी स्वरूपों की जीवनशैली का मानो उनमें समावेश है, ऐसी प्रतीति होती है।

भजनीक सुहद् गुरुजी...

* एक बार 'भारत साधु समाज' के तत्कालीन महामंत्री **स्वामिश्री हरिनारायणनंदजी** अशोक विहार मंदिर आए थे। उन्होंने अपने आशीर्वचन के दौरान बताया कि शुरुआत में गुरुजी जब 'भारत साधु समाज' में रहने आए, तब आधी रात को भी जब वे (श्री हरिनारायणनंदाजी) फ्रेश होने इत्यादि के लिए उठते, तो गुरुजी को अकसर बैठकर भजन करते देखते...
* एक बार मंदिर के लिए मिली जमीन कुछ कारणवश रद्द होने के दौरान डी.डी.ए के उपाध्यक्ष ने प.पू. गुरुजी का अत्यधिक अपमान करते हुए उन्हें दुत्कार दिया... साथ में गए मुक्तों को बहुत हर्ट हुआ। पर, प.पू. गुरुजी ने मंदिर लौट कर सभी को १२ घंटे की अखंड धुन करने के लिए कहा। हम सभी ने सोचा कि जमीन की समस्या हल हो जाए, इसलिए प.पू. गुरुजी धुन करवा रहे हैं। पर, प.पू. गुरुजी ने वह धुन करने के पीछे की भावना बताई कि–

  डी.डी.ए. के उस अफसर ने जो वर्ताव किया, उससे हमारे या किसी भगत के दिल से बद्दुआ न निकल जाए, सो धुन कराई है।

  हम सब आश्चर्य में तो पड़ ही गए, पर साथ ही एहसास भी हुआ कि प.पू. गुरुजी के रूप में हमें कैसी विभूति मिली है।

पिछले २८ सालों में अनेक प्रकार के उतार -चढ़ाव, ज्वार भाटे आते देखे हैं। पर, प.पू. गुरुजी का प.पू. काकाजी के प्रति दृढ़ विश्वास एवं प्रीति में ज़रा-सा भी फर्क दिखाई नहीं पड़ा... **दृढ़ भरोसे से भजन का ही आधार उन्होंने खुद लिया और संबंध में आए मुक्तों को भी भजन का ही आधार लेना सिखाया है।** हर एक छोटी से छोटी क्रिया करते हुए पहले एक मिनिट प.पू. काकाजी की स्मृति जरुर कर लेते हैं...

भगवान भजने के मार्ग में काम आए – ऐसा कुछ न्यूज़पेपर, मैगज़ीन, टी.वी. इत्यादि में से वे ढूंढ लेते हैं। हमें भी मूर्ति में ही रह कर, प.पू. काकाजी के शब्दों में – 'प्रभु के नाम का नमक डाल कर' ही, हर क्रिया करने का सिखाते हैं। इसलिए आज दिल्ली मंदिर का छोटा-सा बच्चा भी अपने लेवल की समस्या आने पर 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' धुन का ही आधार लेता दिखाई पड़ेगा।

प.पू. गुरुजी का बहुत बार अपमान होते हुए मैंने देखा है। पर तब भी बिना कोई फर्क रखे प.पू.गुरुजी ने उन चैतन्यों को हमेशा संभाला है।

एक परिवार ने तो प.पू. गुरुजी को अपमानित करने में कोई कसर छोड़ी नहीं थी... लेकिन, एक बार प.पू. गुरुजी अमदावाद में थे और... वहाँ उन्होंने टी.वी. पर देखा कि अमरनाथजी के रास्ते में लॅन्डस्लाइडिंग हुई है और उन दिनों उस परिवार के दो सदस्य वहीं गए हुए थे। तो, प.पू. गुरुजी ने तुरंत दिल्ली उनके बेटे को फोन करवा कर सारी खबर पूछी कि वे सकुशल हैं न? मैं तो यह दृश्य देख कर दंग रह गई कि किस मिट्टी का **यह साधु** कि **सिर्फ** प.पू. काकाजी का **संबंध ही देखता है!** यूँ प.पू. गुरुजी ने जीकर हमें न केवल भजन करना, भजन का बल लेकर जीना सिखाया है, बल्कि मान–अपमान से परे रह कर अपने गुरु से संबंध दृढ़ कर लेने की करामात भी बताई है।

कुटुंबभाव प्रगटाएं अपनापन दे करके सबको, गुरुजी...

ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज की आज्ञा से कुटुंबभाव से जीवन जीए प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी और पू. कांतिकाका का जीवन प.पू. गुरुजी को खूब स्पर्श कर गया। **'कुटुंबभाव जितना बढ़ा, उतना सत्संग का विकास हुआ मानना'** – यह है उनका सूत्र। खूब भीड़ इकट्ठी हो जाए, सब वाहवाही करें... बहुत लोग उन्हें पूजने-मानने लगें, धूमधाम से शोभायात्रा निकले, मार्बल का या सोने का मंदिर बन जाए, वगैरह में कभी प.पू. गुरुजी की चाह दिखाई नहीं पड़ी। प.पू. काकाजी द्वारा कहे शब्द... सोने के मंदिर हो जाएं या हम हीरों से भी तोले जाएं, उससे बड़प्पन नहीं, बड़प्पन तो 'गुणातीत साधुता' से है।

और... यह प्राप्त करने के लिए **गुणातीत समाज के सर्जक ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी हैं – यह हम स्वप्न में भी कभी न भूलें।** 'गुणातीत समाज के सर्जक, प्रणेता प.पू. काकाजी, प.पू.पप्पाजी गुणातीत समाज के स्तंभ' – इस बात को इन्होंने सिर्फ बोलने में ही नहीं रखा, बल्कि दिल की सच्चाई से वर्तकर बताया है। **इन दो विभूतियों का संबंध देख कर हम सब आपस में मिलजुल कर हंसते-खेलते आनंद करें। आपस में मतभेद भले हो, पर मनभेद न हो** – यही उनकी चाहना रही है।

स्थूल रूप से तो इनके हर एक कार्य में संपूर्णता है ही; मंदिर में भक्त लोग आए हों, तो उनकी ख़ातिर करना, उनकी कॅर करना... उन्होंने चाय-पानी वगैरह लिया या नहीं, यह ध्यान रखना – यह भी इनकी **'गुणातीत अस्मिता'** है। रात को कोई हरिभक्त अगर लेट आने वाला हो, तो देर रात तक जागकर भी वे उसका इन्तज़ार करते रहते हैं। तभी तो आज गुणातीत समाज का कोई भी मुक्त उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता और ऐसी छोटी-छोटी चीजें हमें बहुत कुछ सिखा जाती हैं। और... इसीलिए प.पू. गुरुजी के 'योगी परिवार अमृत आनंदोत्सव' के 'लोगो' में लिखा भी गया है **'कॅरिंग धाई नेम इज़ गुरुजी'! चाहे कोई व्यक्ति एक ही बार गुरुजी को मिला होगा, पर उसे उनका यह अपनापन – निखालसभाव भीतर में स्पर्श कर ही जाता है।**

आधी रात को भी भक्तों के सुख-दुःख के भागीदार प.पू. गुरुजी बने हैं। रात को बारह या दो बजे भी किसी भक्त को गुरुजी को फोन करने में हिचक नहीं होती। अरे! अपने माँ-बाप से भी पहले प.पू. गुरुजी को खबर देनी है, ऐसी भावना आज परिवारों में प.पू. गुरुजी ने भरी है; भक्तों के दिल में ऐसा स्थान लिया है।

पाँच-दस लाख लोगों की भीड़ न हो, भले थोड़े ही पर आत्मबुद्धि-प्रीति वाले कुटुंब तैयार हों, यही उनका लक्ष्य है, यही उनका जीवन ध्येय है। एक बार प.पू. गुरुजी ने बताया था कि प.पू. काकाजी ने ऐसा कहा है कि ***एक साल में निष्ठा वाला एक परिवार भगवान व संत के बल से जीने वाला तैयार हो, तो सारे साल का मेरा खर्चा वसूल है।***

और... दिल्ली जैसी जगह में, जहाँ 'स्वामिनारायण' नाम तक कोई जानता नहीं था, वहाँ उन्होंने अपने संपर्क में आते सभी परिवारों के जीवन में ओतप्रोत होकर प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी एवं पू. कांतिकाका की जीवनशैली को अपनाता हुआ एक नूतन दिव्य परिवार दिल्ली-हरियाणा-पंजाब में वाकई खड़ा कर दिया है।

महिमा तेरे रोम-रोम से पल-पल छलका करती है...

प.पू. गुरुजी खूब छुपे रहते हैं... **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी** का प्रसंग सुना था कि वे सभी ४० साथी संतों के जूतों की गठरी सिर पर लेकर चले। **उन्होंने अपनी महिमा छुपा कर रखी होगी ही, वर्ना अपने जूते उठाने के लिए संतगण उन्हें कैसे देते?** दूसरी ओर, उन्हें महाराज के संबंध वाले संतों की कैसी महिमा होगी?

गुरुजी को भी – भक्तों के लिए मैं क्या कर दूँ, इसके लिए ही उनका सारा उद्यम रहता है। एक मुक्त को हार्ट की तकलीफ हुई थी। एन्जियोग्राफी कराने के बाद कुछ दिन उसे जिस घर में रुकना था, प.पू. गुरुजी उस घर का टॉयलेट तक पहले देखकर आए कि वो टॉयलेट यदि इन्डियन होगा, तो उसे तकलीफ पड़ेगी!

छोटे बच्चे से लेकर बड़े तक कोई सिर्फ एक बार यह कह दे कि गुरुजी मुझे यह पसंद है-अच्छा लगा, तो तुरंत, चाहे कितनी भी महंगी चीज़ क्यों न हो, वो उसे दे देंगे। अच्छी पेन, अच्छी चीज़ आने पर संभाल कर रखेंगे और समय आने पर हरिभक्तों को दे देने को वे तत्पर रहेंगे। यूँ **निष्ठा वाले आत्मीय भक्तों के पास उनका कोई रिझर्वेशन ही नहीं है। किसी की पसंद का ज़रा-सा भी ख्याल पड़े, तो तुरंत उसे वह वस्तु देकर प्रभु की मूर्ति लूट लेते हैं।**

* प.पू. काकाजी के समय के पुराने जोगी **प.भ. वाई.पी. गुलाटी साहेब** एक बार दर्शन करने मंदिर आए। प.पू. गुरुजी के मोबाइल में काकाजी की धुन करती मूर्ति देख कर वे बोले– *यह बहुत अच्छी लग रही है।* उन्होंने इस मूर्ति को अपने मोबईल में भेजने के लिए कहा। पर, प.पू. गुरुजी तुरंत बोले– *आप यह मोबाईल ही ले जाओ।* ऐसे ही एक बार वे मंदिर में एक सोफे पर बैठे, जो उन्हें बहुत आरामदायक लगा और वे बोले कि *यह सोफा भजन करने बैठने के लिए अच्छा है।* उनके इतना कहने पर ही प.पू. गुरुजी ने वह सोफा उनके साथ घर पर भिजवा दिया! प.पू. गुरुजी की इसी अदा से प्रभावित होकर **गुणातीत ज्योत की पू. मनीबेन** ने एक बार कह भी दिया– ***दिल्ली यानि मूर्ति लूटारुनो प्रदेश...***

प.भ. नवीनभाई का पोता **नक्षत्र** तो मात्र चार साल का है। लेकिन प.पू. गुरुजी उसका भी निराली महिमा से जतन करते दिखाई पड़ते हैं। हमें मन में विचार भी आ जाता है कि बड़े होकर नक्षत्र को याद भी रहेगा कि प.पू. गुरुजी ने मेरे लिए इतना परिश्रम किया था-समय निकाला था। पर, हम भूल जाते हैं कि वे तो उसकी चेतना को देख कर ही इतना जतन कर रहे होते हैं।

यूँ, प.पू. काकाजी के वचन से आत्मीयता की धूनी रमाये बैठे हैं गुरुजी! **पाँच भेद में काम कर रहे हैं।** स्थूल लेवल पर हरिभक्तों के साथ रसबसता, साधकों को टकोर, कोई राजकारणी आए तो उसके साथ उस तरीके से भी! इस प्रकार, प.पू. गुरुजी का अनेक रूपों में दर्शन होता है।

प.पू. गुरुजी के जन्मोत्सव को हम 'आनंदोत्सव' कहते हैं। क्योंकि–कैसे भी संजोगो में वे स्वयं आनंद में रहते हैं और संबंध में आने वाले को भी अपने जॅस्चर्स से खुश रखने, राजी रखने व आनंद में रखने का जतन करते दिखते हैं।

जीव का हितैषी मिल गया...

प.पू. गुरुजी के संबंध में आए जीव को उनके परफॅक्शन, सिन्सियारीटी से व्यावहारिक रूप में भी बहुत कुछ सीखने को मिलता है। अगर थोड़े समय भी प.पू. गुरुजी के पास से कुछ लेने की भावना से उनकी हर क्रिया को निहारें, तो हमें कई व्यावहारिक व आध्यात्मिक मर्म सीखने को मिल जाएंगे... जैसे–

फोन का मॅसेज बिना भूले दूसरे को तुरंत भेज देना,

कहीं जाना हो, तो हमेशा सारे काम–वहां क्या ले जाना है और क्या लाना है, सब की सूची बना लेना,

उनसे आशीर्वाद लेने के लिए किसी का फोन आए, तो फोन पर धुन करवानी आदि...

स्थूल व्यवहार की छोटी-छोटी बातें भी वे सिखाते हैं। जैसे–

सोफे के साथ एकदम सट कर मत बैठो, ताकि यदि किसी को उस पर बैठना हो तो वह आसानी से बैठ सके,

कमरे से बाहर निकलते हुए लाईट-पंखा बंद करो,

नहाने के बाद साबुन नीचे नहीं छोड़ो, वर्ना गीला होकर गलता रहेगा,

सुबह उठने पर, अपना बिस्तर खुद उठा कर व्यवस्थित जगह पर ठीक से रखो।

प.पू. गुरुजी विचरण के लिए जाते हैं; वहाँ यदि बाथरूम इत्यादि कम होते हैं, तो स्वयं सुबह जल्दी ही नहा कर तैयार हो जाते हैं, ताकि अन्यों के लिए बाथरूम खाली रहे; जबकि रात को १२:००-१२:३० बजे तो वे सोने के लिए गए होते हैं। इतनी छोटी-छोटी बातों के बारे में भी वे खूब कॅयरफुल...

प.पू. गुरुजी की बातों में से साधना की हमेशा कोई नई सूझ-दिशा मिलती है। मैंने हमेशा देखा है कि गुणातीत समाज के सभी ज्योतिर्धर भी प.पू. गुरुजी के प्रवचन खूब ध्यान से सुनते हैं और उनकी बातें सुनने के लिए उत्सवों में भी पूर्ण शांति का माहौल बन जाता है। दरअसल, उनकी बातें सुनने के लिए सभी इसलिए लालायित रहते हैं कि उनकी बातों में से जरुर कुछ नया ही जानने को मिलता है! और... **ऐसे गुरुजी का निरंतर संबंध हमें मिल गया–यह हमारा कैसा सौभाग्य!**

प.पू. गुरुजी ने २६ जनवरी'८६ को गुणातीत ज्योत में सभा में प.पू. काकाजी के साक्षात्कार दिन निमित्त बातें की थीं। तब तक मुझ में सत्संग की गहराई या सूझ नहीं थी। पर, जब पूरे गुणातीत समाज के बीच खुले दिल से प.पू. गुरुजी ने अपने जीवन के प.पू. काकाजी के साथ के कुछ प्रसंग बताए, तो मैं ताज्जुब में रह गई और लगा कि **मुझे मिला साधु** सबसे कुछ अलग है। हम तो अपनी कमजोरी को लोगों की नज़र से छुपाने का ही प्रयत्न करते रहते हैं और उजले बने रहने की फिराक में रहते हैं; जबकि प.पू. गुरुजी इतनी बड़ी सभा में भी ऐसे ओपन! दिल्ली मंदिर के महंत होते हुए भी वे अपने प्रसंग बताते हुए कभी भी हिचकते नहीं। कोई उनके बारे में क्या सोचेगा, इसकी तनिक भी परवाह नहीं। **ऐसा केवल वही व्यक्ति कर सकता है, जिसकी नज़र केवल अपने गुरु की तरफ हो या जो भगवान मे अखंड रहता हो; बाकी किसी की हिम्मत ही नहीं हो सकती।**

सच, प.पू. गुरुजी की रीति-नीति खूब अनोखी है... जिससे हर कोई उनसे आकर्षित हो जाता है। फिर भी, किसी को अपने में जोड़ देने का प्रयास उन्होंने कभी नहीं किया। प.पू. गुरुजी की ही बातों में सुना था कि **स्वयं में जोड़े वो मुक्त, प्रभु में जो जोड़े वो स्वरूप!** ऐसे कई सैद्धांतिक रहस्य उन्होंने मेरे जीव में डाल दिए हैं, जिन्होंने आज तक मुझे किसी अलौकिक भूमिका में फंसने नहीं दिया, बल्कि तुरंत सचेत कर दिया है।

इससे भी अधिक, संबंध वाले मुक्तों को प्रभु व संत का ही अनुसंधान रहे और बाहरी फ़ितूर उन्हें स्पर्श न कर सकें, यही उनका उद्यम रहा है। कोई बाजार जा रहा हो तो प.पू. गुरुजी उसे कहलवाएंगे कि मेरे लिए पाँच रुपये तक की कोई चीज लेते आना। पाँच रुपये में तो आज भला क्या मिलेगा! पर, व्यक्ति का दिमाग़ उस चीज की खोज करते हुए प.पू. गुरुजी के ध्यान में रहता है... बाजार के अन्य प्रलोभन उसे खींच नहीं पाते। **उनके ऐसे चरित्र को अपने मायिक चक्षुओं से हम कहाँ नाप पाएंगे!** कभी-कभी विचार आता है कि अपने प्यार से **हमें इस रास्ते पर अग्रसर किया और कब उन्होंने हमारी उंगलियाँ माला फेरती कर दीं, इसका पता ही नहीं चला।**

दरअसल, प.पू. गुरुजी को जो जिस लेवल से देखता है, वे उसके चैतन्य को उसी ढंग से आगे लेते हैं। कोई उन्हें सामान्य साधु मानता है, तो उसके साथ उसी कक्षा से, कोई पिता, दोस्त, भाई का रिश्ता रखता है, तो उसके साथ उसी कक्षा से, कोई प्रभु का स्वरूप मानता है, तो उसे उसी ढंग से अनुभव होता है।

सच्चा साधु कभी चमत्कार दिखाने में नहीं मानता और न ही अपने संबंध में आने वाले को उसमें कभी झूलने देता है। प.पू. गुरुजी ने भी चमत्कार, रिद्धि-सिद्धि, ऐश्वर्य-प्रताप का सहारा लेकर यहाँ सत्संग का विकास नहीं किया है। **साधु का हुन्नर** यानि – संबंध में आए जीव के स्वभाव-प्रकृति का दिव्यता में ट्रान्सफॉर्मेशन! इसी के मुताबिक **सेवकों से भूल हो जाने पर प.पू. गुरुजी कभी नाराज़ नहीं होते, पर यदि कोई चालाकी करके अपनी भूल छिपाने की कोशिश करता है, तो उसकी चालाकी को चलने भी नहीं देते!**

स्वामी की बातों में लिखा है – 'जीव को साफ-सुथरा करके प्रभु की गोद में रख देना' – यही साधु का काम है; जैसे माँ अपने बच्चे को नहला-धुला कर उसके बाप की गोदी में देती है, ठीक उसी प्रकार प.पू. गुरुजी

भी इसी मार्ग चलते दिखाई पड़ते हैं। कभी कहीं प्रचार-प्रसार के लिए वे नहीं जाते; पर, मंदिर के गेट के अंदर जो आ जाए, उसकी हर प्रकार से – व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक जिम्मेदारी लेकर, फिर वो चाहे छोटा हो या बड़ा, उसके चैतन्य की परवरिश करते हैं।

कुछ समय पहले पू. नक्षु के लिए प.भ. प्रमीतभाई खिलौने की एक ट्रेन लाए थे। ट्रेन के डिब्बों में पेसेन्जर्स बैठे हुए दिखाए गए थे। ट्रेन से खेलते हुए सहज ही नक्षु ने उसमें बैठी लेडीझ पेसेन्जर्स को बाहर निकाल कर एक हुक पर लटका दिया और ताली बजाते हुए बोला – शोभना आंटी और विधि (सौ. शोभना भाभी की पोती) को लटका दिया... वहाँ बैठे प.पू. गुरुजी ने जैसे ही यह सुना तो तुरंत नक्षु को ठाकुरजी के सामने दंडवत् करवाए और माफ़ी माँगने को कहा। फिर उससे बोले –

'नक्षु, हम भक्तों को यदि ऐसे लटका देंगे, तो प.पू. काकाजी हमें भी ऐसे ही लटका देंगे।'

देखा जाए, तो यह केवल खेल-खेल की बात थी। पर, इस भाव द्वारा प.पू. गुरुजी भक्तों का माहात्म्य समझाना चाहते थे। जब **चार साल के पू. नक्षु से प.पू. गुरुजी ऐसी उम्मीद करते हैं, तो हमसे तो उनकी कैसी अपेक्षा होगी?**

हम समूह में रहते हैं तो आपस में स्वभावों की टकराहट के कारण प्रसंग भी बनते ही हैं; पर, तब – प्रभु का ही कर्ताहर्तापन मानकर पीछे हठ करा हो, तो उसका भी रिफ्लॅक्शन किसी भी तरह – चाहे प्रसाद देकर, प्रसन्नता बनाकर अंतर्यामीरूप से – वे दे ही देते हैं।

हर एक पल जीवन की, हर एक धड़कन दिल की तेरे लिए हो हमारी...

अपने दिल्ली मंदिर में कोई भी कमर्शियल एक्टिविटी नहीं है। कई बार हम सब सोचते हैं कि प.पू. गुरुजी किस तरह मंदिर का यह सारा खर्चा चलाते होंगे। प.पू. काकाजी जब तक स्थूल शरीर में रहे, तब तक तो वे सारा खर्च भेजते थे... **२८ साल से प.पू. गुरुजी के संबंध में आई हूँ, पर आज तक एक हरिभक्त भी ऐसा नहीं कह सकता कि प.पू. गुरुजी ने मुझसे यह सेवा मांगी।** हरिभक्त अपने आप अपनी श्रद्धा से, अपनेपन से दे जाएं, वो बात अलग है।

और... ऐसे सहयोग से, प.पू. काकाजी के भरोसे, भगवान भजने वाली बहनों के लिए तो 'अक्षरज्योति' भवन का निर्माण करा दिया, जिसमें बहनें आसानी से रहतीं और भगवान का भजन और सेवा करती हैं; किन्तु १९९४ में दिल्ली मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा हुई, तब से आज तक करीब १५ साल से मंदिर का निर्माण कार्य अधूरा ही रह गया है। ऐसी परवरिश रखने वाला और कहाँ नसीब होगा?

प.पू. गुरुजी ने '**समाज सेवा**' का ज़िक्र करते हुए स्वामी की बात प्र. १ की १४७वीं पढ़वाई है कि जूनागढ़ से वड़ताल तक सड़क बनवा दें पर...

प.पू. काकाजी - प.पू. पप्पाजी भी तो कहते कि यह तो टाटा-बिरला जैसे करते रहेंगे, वो अपना काम नहीं है। **अपना काम तो बस सबसे पहले भगवान की मूर्ति सिद्ध करके अन्यों को बाँटने का है।** प.पू. काकाजी ने वाकई, खूब कृपा करके हमें प.पू. गुरुजी जैसे संत की छत्रछाया में रख दिया है।

एक बार प.पू. गुरुजी ने वचनामृत प्रथम ५४ पढ़वा कर बताया था – *माता देवहुति ने कपिलदेवजी से पूछा कि मेरा स्त्री का देह है, पर मेरा मोक्ष कैसे हो सकता है ?*
तब, कपिलदेव ने कहा – *जैसी आत्मबुद्धि एवं प्रीति हमें अपने रिश्तेदारों से है, वैसी भगवान के साधु से-भक्त से हो, तो मोक्ष हो सकता है !*
मेरे मन में यह बात एकदम फिट बैठ गई है कि कितना आसान रास्ता बता दिया। सो, हमें तो संबंध वाले मुक्तों में रसबस होकर हमें मिले स्वरूप को राजी कर लेना है।

१९९०-१९९१ में जब दिल्ली मंदिर का निर्माण हो रहा था, प.पू. गुरुजी मंदिर की साईट पर गए... हम कुछ बहनें भी दूर से प.पू. गुरुजी के दर्शन कर रही थीं। मंदिर के बेईझमेन्ट की एक दीवार को प.पू. गुरुजी बहुत देर तक बारीकी से देखते रहे ; फिर उससे कान लगा कर खड़े रहे और बोले कि यह टेढ़ी है, सीधी नहीं है। हम जितने भी साथ में थे, उसमें से किसी को भी वह दीवार टेढ़ी नहीं लगी। आख़िर प.पू. गुरुजी ने खुद सामने खड़े रह कर इंचीपट्टी से नपवाई... तो आश्चर्य की बात कि उसमें दो सूत का फर्क निकला ! मेरे मन में विचार आया कि सीमेन्ट की स्थूल दीवार के लिए जिनकी ऐसी पैनी दृष्टि है, तो जन्मों से हमारे चैतन्य पर पड़े दागों को भी वे जरुर मिटा ही देंगे, ऐसी प्रभुधारक विभूति प.पू. गुरुजी के रूप में हमें मिल गई है !!

दरअसल, **प.पू. गुरुजी इतने अधिक भक्तों के लेवल पर उतर जाते हैं कि उनमें भगवान की शक्ति सांगोपांग काम कर रही है, ऐसा ख्याल भी हमारे मन में आने ही नहीं देते।** उन्हें तत्त्व से पहचानना अत्यंत कठिन है।

तो, हे गुरुजी ! आप राजी हो जाओ और हमारी ओर से आपको कोई दर्द न रहे... आपका स्वरूप जैसा है वैसा – तत्त्व से पहचान लें और प.पू. काकाजी जैसे बार-बार मूर्ति सिद्ध करने का आग्रह करते, तो आपके बल से प्रभु की मूर्ति सिद्ध कर लें– साधुता की डिग्री हासिल करें।

अंत में , अपने वर्तन से – अपनी प्रगति से हम इन ज्योतिर्धरों की सच्ची पहचान बनें और इन्हें अमर रखें , इसी को, हमने इनकी सच्ची सेवा की, ऐसा माना जाए और... इस सेवा में ही हमारे जीवन की धन्यता समाई हुई है। **'स्व' का भाव छोड़ कर, गुणातीतभाव को जो पाए, वही महाराज के कार्य का 'निमित्त पात्र' बन सकता है –** ऐसा निमित्त बनने के लिए हम तत्पर रहें। अपनी समझ छोड़ कर प्रगट प्रभु की रीति – उनके ढंग से ही हम चलें – यही **प.पू. काकाजी महाराज** के **साक्षात्कार की हीरक जयंती** एवं **प.पू. गुरुजी के अमृत पर्व वर्ष** के मंगलकारी अवसर पर प्रार्थना !

शब्दो में ना बयान हो इतना किया तुमने, रखूँ अखंड याद कितना कुछ किया तुमने
पल पल मेरे चैतन्य का जतन किया तुमने, कमाल है गुरुजी आए मेरे जीवन में...
आप मेरी जिंदगी में आए, तो बात बन गई...

– सेविका आनंदी

✡✡✡

सौरभ - २८

તસ્મૈ શ્રી ગુરુવે નમઃ ।

પૂ. ગુરૂજી એટલે પ્રેમ મૂર્તિ. તેઓ જબરદસ્ત ઈન્ટલૅકચ્યુઅલ અને બહુમુખી પ્રતિભાના માલિક છે. તેમની સૂઝ કાબિલેદાદ છે... આવા પૂ. ગુરૂજીનું એક જ ધ્યાન, એક જ લક્ષ્ય, એક જ મંત્ર અને એક જ શ્વાસ છે – પૂ. કાકાજી! તેમની ગુરૂભક્તિ, ગુરૂ પ્રત્યેનો તેમનો સમર્પણ ભાવ અજોડ છે... પૂ. ગુરૂજી સ્વયં ગુણાતીત સંત છે. તેમનો 'ડિવાઈન પાવર' તેમના સંપર્કમાં આવનાર કોઈ પણ હોય તે અનુભવી શકે છે, પછી તે સત્સંગી હોય કે ના હોય.

ગુજરાત, મુંબઈ, દિલ્હી, ઉત્તરભારત અને પંજાબમાં તેમના પરચાઓનો સૌને અનુભવ છે. પૂ. કાકાજીને જ આગળ ધરીને પગલું માંડતા પૂ. ગુરૂજી મૂળ હું જે શહેરમાં સ્થાયી થયો છું તે સુરતના છે! તેઓ અમારે ત્યાં પ્રથમ વાર ૧૦-૧૧ જુલાઈ ૧૯૯૮માં આવ્યા ત્યારે તેમના દર્શન માત્રથી હું ઉપકૃત થઈ ગયો હતો. આવડા મોટા સાધુપુરૂષ આપણા ઘરે સામેથી આવે, એ ધન્ય ભાગ્ય જ ગણાય. જો કે, તેઓ કાકાજીના કૃપાપાત્ર પૂ. હર્ષદભાઈ ભટ્ટ અને દેવીબેનની પુત્રી એટલે કે મારી પત્ની ભાવનાના કાકાજી સાથેના સંબંધને કારણે જ પધાર્યા હતા, પરંતુ **તેમને મળતા જ મને તેમની પોતીકાપણાની લાગણી થઈ.** મને બરોબર યાદ છે કે, મારે ત્યાં કોઈ જ વ્યવસ્થા ના હોવા છતાં પૂ. ગુરૂજી અને તેમની સાથેના ભક્તમંડળે તે જરાય કળાવા દીધું નહીં. **પૂ. ગુરૂજી બહુ પારદર્શક વ્યક્તિત્વ ધરાવે છે, જે ભાગ્યે જ જોવા મળે.** પૂ. ગુરૂજી દરેક બાબતને ગુરૂકૃપા લેખાવે છે. મારા ઘરે પૂ. ગુરૂજીની પધરામણી બાદ મને મારામાં ઘણો ફરક આવતો જણાયો. જાણે આખો માણસ બદલાઈ ગયો. સૌને સાથે લઈને ચાલવાની તેમની રીત અનોખી છે...

પૂ. ગુરૂજીના ચમત્કારોની વાતો સાંભળતો ત્યારે આશ્ચર્ય થતું. જો કે, હવે કોઈ આશ્ચર્યો નથી રહ્યાં. પૂ. ગુરૂજીએ દિલ્હીમાં જે કામો કરી બતાવ્યાં છે તે બધાં જ નજરે દેખાતા ચમત્કારો છે. અક્ષરપરૂષોત્તમ સ્વામિનારાયણ મંદિર, કાકાજી લેન, સ્વામિનારાયણ માર્ગ, પૂ. કાકાજીની ટપાલ ટિકિટ, શ્રીજી ફેબ્રુઆરી પાર્ક વગેરે ખરેખર અજાયબીઓ છે. અનન્ય સિદ્ધિઓ છે. **પૂ. ગુરૂજીને પ્રતાપે હું પૂ. કાકાજી અને પૂ. પપ્પાજીને કંઈક સમજી શક્યો છું** એટલું જ નહીં, તેઓનું પ્રિયપાત્ર બની શક્યો છું. મને ક્યારેક કોઈ પ્રશ્ન ઉદ્‌ભવે, તો તરત પૂ. ગુરૂજીને ફોન કરૂં અને તરત જવાબ મળે. ભૌતિક ફાયદાઓ કરાવવા એટલે કે ગાડી, બંગલા આપવા, પરીક્ષામાં પાસ કરાવવાથી માંડીને લગ્ન, સંતાન પ્રાપ્તિ, ધંધામાં બરકત કે માંદગીમાંથી સાજા કરવા જેવા ચમત્કારોનો મોટા પુરૂષો માટે કોઈ અર્થ હોતો નથી. **તેઓ દ્વારા થતો મોટો ચમત્કાર હોય છે – રૂપાંતર! આખો માણસ બદલાય જાય. આ પ્રોસેસ બહુ અઘરી હોય છે, જે પૂ. ગુરૂજી માટે સહજ છે.**

યોગી ડિવાઈન સોસાયટી સંલગ્ન તારદેવ, પવઈ, ગુણાતીત જ્યોત, બ્રહ્મજ્યોતિ, હરિધામ, શિકાગો, માણાવદર સહિતનાં કેન્દ્રો સાથે સંકળાયેલા નાના મોટા હરિભક્તો, સત્સંગીઓ પ્રત્યેનો

તેમનો ભાવ પોતીકો જ હોય છે. ભગવાન સ્વામિનારાયણમાં માનતા તમામ પ્રવાહોને તેઓ ખૂબ આદર આપે છે. તેઓ બધાને એક તાંતણે બાંધવા સતત મથે છે. સામે આવેલા મુક્તને માથાનો મુગટ માનવાની પૂ. કાકાજીની વાત તેમણે અનુસરી જાણી છે. પૂ. આનંદીદીદી અને અન્ય સંત બહેનો પણ તે જ પ્રમાણે શોભાડી રહ્યા છે. **આપણો જન્મદિવસ કે બીજો કોઈ ખાસ પ્રસંગ આપણે કે આપણો પરિવાર ભૂલી જાય, પણ પૂ. આનંદીદીદી ના ભૂલે.** દરેકે દરેક સત્સંગી તેઓ માટે સરખા હોય છે. **પૂ. ગુરૂજીએ તૈયાર કરેલો ગુણાતીત સમાજ અલગ જ તરી આવે** એવો અનોખો, પ્રેમાળ અને સેવાભાવી છે. **દિલ્હી મંદિરે જનારા સૌ કોઈને તેનો અનુભવ હશે.**

મોટા પુરૂષોની મોટી ખાસીયત એ હોય છે કે, તેમના દર્શનથી તેમના સાન્નિધ્યથી તમને આપોઆપ તમારી સ્થિતિનો ખ્યાલ આવી જાય. તમે તમને એટલે કે 'સ્વ'ને ઓળખવા માંડો! આખો આધ્યાત્મિક આયામ જ આ છે! જેને ઘણા પૂર્ણાહુતિ માની લે છે. હકીકતમાં એ પ્રારંભ હોય છે. જેનો પ્રારંભ આટલો આહ્લાદક હોય તો તેની ચરમસીમા કેવી હશે! તે જાણવા તો તેઓ કહે તે રીતે ચાલવું જ રહ્યું, જે અતિ અઘરૂં છે. જે 'સ્વ'ને ઓગાળી શકે તે જ કદાચ તે અનુભવી શકે. ગુરૂકૃપાનું અહીં જ અદકેરૂં મહત્ત્વ છે. 'હાં હાં ગડથલ' જ ઉપાય છે. તેથી ગુરૂકૃપા સહજ છે, પણ તેના પાત્ર બનવું પડે. બસ હું પાત્ર બનું એવી ગુરૂજીને પ્રાર્થના કરૂં છું.

અખંડ મંડલાકારં વ્યાપ્તં યેન ચરાચરં તત્પદં દર્શિતં યેન તસ્મૈ શ્રીગુરૂવે નમઃ!

– અમૃત વડિયા, સુરત

[हिन्दी अनुवाद]

प.पू. गुरुजी यानि प्रेम की मूर्ति। वे जबरदस्त इन्टलॅक्चयुअल और बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। उनकी सूझ क़ाबिलेतारीफ़ है... ऐसे पू. गुरुजी का एक ही ध्यान, एक ही लक्ष्य, एक ही मंत्र और एक ही श्वास है – पू. काकाजी! उनकी गुरुभक्ति, गुरु के प्रति उनका समर्पणभाव बेमिसाल है... पू. गुरुजी स्वयं एक गुणातीत संत हैं। उनके संपर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति उनकी 'डिवाईन पावर' का अनुभव कर सकता है, भले ही वह सत्संगी हो या न हो।

गुजरात, मुंबई, दिल्ली, उत्तरभारत और पंजाब में सभी को उनके चमत्कारों का अनुभव है। पू. काकाजी को ही आगे रख कर कदम उठाते पू. गुरुजी, मूलतः तो मैं जिस शहर में रहता हूँ, वहीं के हैं! वे हमारे यहाँ पहली बार १०-११ जुलाई १९९८ में आए थे। तब उनके दर्शन मात्र से मैं उपकृत हो गया था। इतने बड़े साधु पुरुष हमारे घर स्वयं आएँ, यह तो धन्य भाग्य ही कहा जाएगा। यद्यपि, वे काकाजी के कृपापात्र पू. हर्षदभाई भट्ट और देवीबहन की सुपुत्री यानि मेरी धर्मपत्नी भावना के काकाजी के साथ के संबंध के कारण ही पधारे थे; परंतु **उनसे मिलते ही मुझे उनसे एक अपनेपन का भाव हो गया।** मुझे अच्छी तरह याद है कि हमारे यहाँ किसी भी प्रकार की कोई सुविधा न होने के बावजूद, पू. गुरुजी और उनके साथ के भक्त मंडल ने इस बात का तनिक भी एहसास नहीं होने दिया। **पू. गुरुजी का व्यक्तित्व बहुत पारदर्शी है, ऐसा शायद ही अन्यत्र नज़र आए।**

पू. गुरुजी हर एक उपलब्धि को गुरुकृपा ही मानते हैं। हमारे घर पू. गुरुजी की पधरामनी होने के बाद मुझे अपने में बहुत बदलाव आता प्रतीत हुआ है। मानो पूरा व्यक्ति ही बदल गया। सभी को साथ लेकर चलने की उनकी रीत अनोखी है...

पू. गुरुजी के चमत्कारों की जब बात सुनता, तब आश्चर्य होता था। हाँलाकि, अब कोई आश्चर्य नहीं रहा। पू. गुरुजी ने दिल्ली में जो काम किए हैं वे सभी की नज़र में चमत्कारों से कम नहीं। अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर, काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, पू. काकाजी की डाक टिकिट, तीन फरवरी पार्क – ये सभी सच में अचरज ही हैं। अनन्य सिद्धियाँ हैं। **पू. गुरुजी के प्रताप से मैं पू. काकाजी और पू. पप्पाजी को थोड़ा समझ सका हूँ;** इतना ही नहीं, उनका प्रिय पात्र बन सका हूँ। जब कभी कोई प्रश्न उठता है तो तुरंत पू. गुरुजी को फोन लगाता हूँ और तुरंत जवाब मिलता है। महापुरुषों की दृष्टि में भौतिक लाभ जैसे कि – गाड़ी, बँगला, परीक्षा में पास कराने से लेकर विवाह, संतान प्राप्ति, व्यापार में बरकत या बीमारी से रोगमुक्त करना इत्यादि चमत्कार कोई मायने नहीं रखते। **उनके द्वारा होता बड़ा चमत्कार है – स्वभाव का परिवर्तन! पूरा व्यक्ति ही बदल जाए। यह प्रोसेस बहुत मुश्किल होता है, किन्तु पू. गुरुजी के लिए यह सहज ही है।**

योगी डिवाईन सोसाईटी से संबद्ध ताड़देव, पवई, गुणातीत ज्योत, ब्रह्मज्योति, हरिधाम, शिकागो, माणावदर सहित सभी केन्द्रों के साथ जुड़े छोटे-बड़े हरिभक्त, सत्संगियों के प्रति उन्हें निजी लगाव है। भगवान स्वामिनारायण को मानने वाले सभी प्रवाहों को वे खूब आदर देते हैं। वे सभी को एक जुट करने के लिए सतत प्रत्यनशील हैं। सामने आने वाले मुक्त को सिर का ताज मानने की पू. काकाजी की बात का उन्होंने अनुसरण किया है। पू. आनंदी दीदी और अन्य संत बहनें भी इसी तरह शोभा बढ़ा रही हैं। **हमारा जन्मदिन या अन्य कोई खास प्रसंग हम या हमारा परिवार भले ही भूल जाए, लेकिन पू. आनंदी दीदी नहीं भूलतीं।** हर एक सत्संगी उनके लिए एक समान है। **पू. गुरुजी द्वारा तैयार किया गया गुणातीत समाज** – ऐसा अनोखा, प्रेमभरा और सेवाभावी है कि यह अलग ही दिखाई देता है। **दिल्ली मंदिर जाने वाले हर किसी को इसका अनुभव हुआ होगा।**

बड़े पुरुषों की विशेषता यह होती है कि उनके दर्शन से – उनके सान्निध्य - से तुम्हें अपने आप अपनी कक्षा का ख्याल आ जाएगा। तुम अपने आपको, यानि – 'स्व' को पहचानने लगते हो। संपूर्ण आध्यात्मिक विस्तार यही है! इसे कई पूर्णाहुति मान लेते हैं। हक़ीक़त में तो यह मात्र आरंभ है। जिसका प्रारंभ इतना खुशनुमा हो, उसकी चरमसीमा कैसी होगी! लेकिन यह जानने के लिए तो उनके (संत के) कहे मुताबिक चलना ही पड़ेगा, जो अति कठिन है। जो 'स्व' को पिघला सके, वही शायद उसका अनुभव कर सकेगा। यहाँ गुरुकृपा अनिवार्य है। 'बस! दो हाथ जोड़ कर, वे जो कहें वह करते रहें' यही एक उपाय है। इससे गुरुकृपा सहज होगी, लेकिन उसके लिए पात्र बनना पड़ता है। मैं ऐसा पात्र बनूँ यही गुरुजी से प्रार्थना करता हूँ।

अखंड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरं तत्पदं दर्शित येन तस्मै श्री गुरुवे नमः!

– अमृत वडिया, सुरत

✡✡✡

Jay Swaminarayan

सौरभ - २९

COMMONWEALTH GAMES: 2010

Nation's pride, P.P. Guruji's blessings and vision

India had the privilege of hosting the XIXth commonwealth games in Delhi from 3rd October – 14th October, 2010.

It was a matter of great pride; we won the bid to host the 19th C.W. games amongst the 77 countries under the C.W. games federation.

In 2006, XVIII C.W. games were held in Melbourne–Australia and I had the good fortune to attend the 'Closing Ceremony' in Mar'2006. The last programme in the closing ceremony is always put up by the next host country. India presented a fantastic programme and everybody had high expectations from programmes to be held in India in 2010. It was really an emotional outburst and every soul was saying – **तिरंगा ऊँचा रहे हमारा !!!**

The country was preparing all through for the mega events at its own pace. Construction of stadia, fly-overs, subways, beautification of roads etc. India was organizing 17 events and venues were spread all over Delhi under control of different agencies. In addition a C.W. Games Village had to be constructed with residential accommodation and facilities for dining, swimming, gym, jogging tracks, cultural centres for the players and delegates from all over the world.

Can anybody think of the saints and sadhus being so interested & active in C.W. games?? The prayers and good wishes of spiritual souls really did help. P.P. Guruji was vigilant and inquisitive all through about the problems, progress and related issues.

Sheer negativity on the part of the media with all wrong reportings, wrong photos which were old and statements to tarnish the country's image were broadcast, telecast and presented all over the world. MEDIA hype literally damaged our reputation and spoilt the impression world over. It was indeed SHAMEFUL.

After all these episodes of poor management, media presentations and portraying sorry figure world over, only ray of HOPE and SUPPORT was – can anybody believe????............It was P.P. Guruji!!!

He was confident, positive and enlightened. He always said – 'Commonwealth Games will be a great success. The world will know what India's hospitality, arrangements and culture is…'

It really went off like that only. During the days of poor presentations and media negativity, everyday, after the routine *sabha* in the temple, P.P. Guruji would ask *sevak* to call me up at 9:00 P.M. to ask about the day's happenings and details and He would just laugh at the negative comments. I conveyed to Him the tensions and depressive moods we were going through. Especially, a day came when it was 'doubtful' … If, at all, the games would be held in India? It was so upsetting and at the same moment P.P. Guruji called me and conferring His blessings with full AUTHORITY and CONVICTION – ***टॅन्शन मत ले, बस एटॅन्शन में आ जा। तेरा बाप बोल रहा है। गेम्स बहुत बढ़िया होंगी !!!***

That was the end of all worries. P.P. Guruji has a vision for the future. He also wrote a very encouraging letter to Lt. Governor, Delhi, who in turn also responded and thanked P.P. Guruji for His blessings. All of us have seen all through, the Divine and Spiritual powers showered on the Nation. The performances during the 'opening' & 'closing' ceremonies of C.W. Games were really eye-catching and amazing. The Indian culture, history rituals were so well showcased, no one could ever imagine… no country, no plane, and no nation could deny INDIA's perception. Even the players and delegates appreciated and admired every bit. They said they had never enjoyed such hospitality, food-variety and entertainment in any country hosting C.W. Games before.

Even during the days of games while medal tally was being discussed, P.P. Guruji asked everyone to pray, and so much of *'Sadhana'*, *'Dhun'* brought the auspicious figure of 101 medals for our country – 'Great Achievement'!!!

These are my personal experiences and interaction with P.P. Guruji during the games. I'll also like to share a small episode. During the games, i.e. 3rd oct.-14th oct., all stadia, markets and important buildings were well illuminated. People used to go especially every night to see the lighting in Delhi and so did we with our family. One morning, during my normal routine of wishing P.P. Didi, I told her that it looks like Diwali has come to Delhi one month in advance. You also with divine sisters must go and see the lighting of stadia. It is quite enjoyable.

As it goes with P.P. Didi's nature, she conveyed my message to P.P. Guruji to chalk out. Next morning P.P. Guruji telephoned me & conveyed– ***'हमें तो पता नहीं आप अपनी दीदी से क्या चीजें दिखलाने को कहती रहती हो, आप ही हमें ले जाओ, नहीं तो हम सब क्या देखेंगे क्या मालूम।'***

I obviously agreed because for me P.P. Guruji asking me to do something is like an opportunity to do something good in life with His blessings. P.P. Didi told me that P.P. Guruji desires the temple-staff to go and see and you please come to the temple in the evening. I immediately worked out a route map and explained to P. Nityaji to inform others in the temple also who will be driving their cars.

When I reached the temple in the evening I was SHOCKED; P.P. Guruji had gathered all the satsangis to go with us and see the 'lighting'. Imagine my good luck, I was the pilot of the total CONVOY – I was leading the car of P.P. Guruji and then P.P. Didi followed and almost 20 cars behind P.P.Didi's car. I was really on the top of the world leading the most learned, most devoted and most dedicated group of people – I have no words to express... everybody was enjoying as if he were on a picnic and all cars were loaded with snacks, water bottles, chocolates etc. It was a real enthusiastic trip.

Before reaching each stadium, I would call up P.P. Guruji to convey Him the details-which event would take place there, effect and impact of lighting, colour influence by lighting and related details and immediately would call up P.P. didi to give her the same details. Shobhana bhabhi and Anita bhabhi were accompanying me in my car. I was so touched and surprised by P.P. Guruji's concern and thoughtful gesture when He immediately after the Ist stop called up Shobhana bhabhi on her phone and conveyed her to tell me that my phone bill would be too heavy as I had to call every time from my mobile phone and explain P.P. Guruji and P.P. Didi also, so I should use Shobhana bhabhi's phone.

Can anybody ever think of the minute details, thoughtfulness and care P.P. Guruji takes of each of us. Imagine! He is worried about my phone bill too. It really touched me to the core of my heart.

This is actually our Good Luck!!! We all are here to share the love, care and affection of P.P. Guruji and P.P. Didi every time. Inspite... of their own ill-health, strenuous life style and busy schedules, they are always there to shield us, protect us, care and love us.

Jay Swaminarayan!!!

Jay Swaminarayan!!!

– Savita Bhandari

✡✡✡

अनादि महामुक्त भगतजी महाराज का प्राकट्य पर्व – होली!

बाह्यदृष्टि से तो 'होली' शब्द सुनते ही अग्नि का ताप महसूस होने लगता है... परंतु, प्रगट प्रभु के बल से यदि गद्‌गद् कंठ से प्रार्थना करेंगे, तो अग्नि के उस ताप में हम अपने हठ, मान, ईर्ष्या का 'स्वाहा' होता महसूस करेंगे। तत्पश्चात् अग्नि हमें अपने रंग में रंग कर शुद्ध कर ही देगी। हुताश के मंगलकारी दिन अनादि **महामुक्त भगतजी महाराज का प्राकट्य** होना भी सांकेतिक ही बना – उन्होंने अपने आपको प्रभु के रंग में रंग कर, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी के स्वरूप की सम्यक् पहचान ऐसी कर ली कि उनके संबंध में आने वाले अनेक जन स्वाभाविक रूप से ही प्रभु के मार्ग पर अग्रसर हो गए। सद्‌गुरु स्वामीश्री निर्गुणदासजी के निम्न उद्‌गार इसकी पुष्टि भी करते हैं –

'अहाहा! भगतजी महाराज की क्या आकर्षण शक्ति! मंद-मंद हास्य करती उनकी तेजस्वी मूर्ति! स्वस्तिक आसन लगा कर वे ध्यान में बैठते, नाड़ी प्राण खींच लेते – यह तो उनका खुल्ला प्रताप था। आँख की वृत्ति खींच कर पाँच-छः घंटे तो पलक भी झपकाएँ नहीं – ऐसी मूर्ति की ओर किसका मन आकृष्ट न हो? मुझे यदि इन भगतजी महाराज की पहचान नहीं हुई होती, तो सत्संगी ही नहीं बन पाता! ऐसे महान प्रतापी थे भगतजी महाराज।'

केवल पाँच वाक्यों में स्वामीश्री निर्गुणदासजी ने मानो प.पू. भगतजी महाराज का पूरा चित्रण कर दिया। सच, भगतजी महाराज के जीवन का कोई भी पहलू निहारें तो ख्याल पड़ेगा कि गुणातीतानंदस्वामिजी की आज्ञा, रुचि, रहस्य और अभिप्राय के मुताबिक ही वे अखंड जिए... आओ, उनके प्राकट्य पर्व निमित्त वर्षों पूर्व **प.पू. काकाजी** द्वारा की गई निम्न कथावार्ता का पान करते हुए प्रार्थना करें कि हम सभी प्रगट संत से ऐसा संबंध दृढ़ करें – ओत-प्रोत होकर इनकी भाँति अंहकार रहित जिएँ – ऐसी कृपा वे हम पर बरसाएँ। **'भक्तों केवल ब्रह्म की मूर्ति...'** भजन की ये पंक्ति केवल गाने तक सीमित न हो; बल्कि पल-पल ऐसे जीते हो जाएं।

विचार एक वस्तु है – पदार्थ है।
स्मृति-संग्रह या भूतकाल के अनुभव के रूप में अनेक द्वंद्व, कल्पना, पूर्वाग्रह और स्वभाव रूप में
वे सतत उत्पन्न होते ही रहते हैं।
प्रत्यक्ष ब्रह्मस्वरूप संत के अंतर की प्रसन्नता के बिना ये बीज निर्मूल होते ही नहीं।
सो ही, **बड़े-बड़े अनादि मुक्तों को भी** शुभ संकल्परूपी भँवर, महामाया के रूप में बाधा रूप बन कर,
भगवान की दिव्यमूर्ति के अपरंपार सुख, शांति, बल और आनंद से वंचित रखते हैं
और
जीतेजी ही साधर्म्यमुक्ति को पाने नहीं देते।
जबकि, गुणातीत ज्ञान की एक अनोखी, अनुपम और अद्वितीय विशिष्टता यही है कि –
अत्यंत अशक्य एकांतिकभाव की प्राप्ति भी सभी साधकों के लिए साक्षात् दिव्यज्योतिर्धरों द्वारा खुल्ली रखी गई,
जिससे विचार का या संकल्प का उद्‌भव स्थान ही निर्मूल होकर दिव्यचेतना में परिवर्तित हो जाता है
और
जीव जीतेजी ही, अक्षरधाम रूप बन कर, स्वामीसेवकभाव से,

परब्रह्म की अखंड सेवाभक्ति करता हुआ, विदेही मुक्ति प्राप्त करता है।
ऐसे सनातन आध्यात्मिक राजमार्ग से बिना किसी विघ्न-बाधा के सुख-चैन से, मंज़िल पर पहुँचने के लिए **सभी संबंध वाले मुक्तों में अखंड दिव्यता और उनके साथ सरलता रखने की आदत डालना अनिवार्य है...**
इसके सिवा *'नान्यः पन्थाः'* –दूसरा कोई उपाय है ही नहीं।
सभी शास्त्र भारपूर्वक यही बताते हैं और सभी संत भी अपने जीवन द्वारा यही आदर्श रख कर गए हैं।
होली के दिन पू. भगतजी महाराज का प्राकट्य दिन है...
और वे तो कहते– ***संबंध वाले हर एक को मैं 'ब्रह्म की मूर्ति' मानता हूँ और देखता हूँ।***
तो, ऐसी सम्यक् दिव्य दृष्टि हम सभी को सुलभ हो और प्राप्त होती जाए
यही उनके प्राकट्य दिन पर गुरुहरि के चरणों में प्रार्थना।

(प.पू. काकाजी महाराज की कथावार्ता में से...)

✡✡✡

आया... सखा स्वरूप 'साहेब' का प्राकट्य पर्व–धुलेन्डी!

जग जाहिर धुलेन्डी का पर्व यानि पारस्परिक वैमनस्य भुला कर हर्षोल्लास से आनंद करने का दिन! और... आश्रितों, मुक्तों के जीवन में प्रभु का रंग भरने के लिए आज ही के दिन **प.पू. साहेब का प्राकट्य** हुआ। जहाँ एक ओर, विशुद्ध हास्य से भरपूर प.पू. साहेब की हसीन छबि नेत्रों के सम्मुख आते ही मुक्त आनंदविभोर हो जाते हैं, तो दूसरी ओर उनकी दिव्य परावाणी प्रगट प्रभु के संबंध की अनिवार्यता का एहसास करवाती है। वर्षों पहले प.पू. साहेब द्वारा दिए गए आशिष हमें केवल प्राप्ति की मस्ती की झांकी ही नहीं, वरन् जीवन में 'प्रगट प्रभु' की महिमा और उनसे संबंध कैसे दृढ़ करें, इसकी प्ररेणा देते हैं। आइए, अनादि के ऐसे स्वरूप प.पू. साहेब के प्राकट्य पर्व पर उनकी परावाणी द्वारा उनके गुणों को निहारते हुए हम अंतर से प्रार्थना करें; साथ ही अपने देहभाव के शत्रुओं से सदैव के लिए मुक्त होकर, उनके जीवन को अपना आदर्श बनाते हुए, 'प्रगट प्रभु' के साथ दिव्य संबंध स्थापित करने की कुँजी हासिल करें...

पू. शांतिभाई और पू. अश्विनभाई ने बात करते हुए बताया कि बापा ने १९६६ में हमें पप्पाजी और काकाजी के सान्निध्य में रहने के लिए भेजा। विद्यानगर में श्रीजी कॉलोनी में रहते थे। बापा की आज्ञा से रोज पप्पाजी और बा के सान्निध्य में हम पी.के. में शाम की सभा करते। उस समय शुरुआत थी। हम ८-९ भाई ही थे। भगवान की इच्छा व संजोग से एक बार गुरुवार के दिन हमारी सभा थी और उसी दिन पोषीपूर्णिमा भी थी। काकाजी मुंबई से पधारे थे। उन्होंने और पप्पाजी ने बा से कहा– *'चलो, हम लड़कों की सभा में जाएँ।'* पप्पाजी ने बा से कहा– *'आप फूल ले लो।'* प्रसाद और पुष्प लेकर बा, काकाजी और पप्पाजी श्रीजी कॉलोनी में आए। हमारे लिए तो मानो चूहे के बिल में हाथी ने प्रवेश किया हो, ऐसी बात हो हई!

गुरुवार की सभा चल रही थी। काकाजी ने कहा– *आज पोषीपूर्णिमा और गुणातीत का दीक्षा दिन है।*

योगीजी महाराज ने आज्ञा दी– ***'छात्रालय छोड़ दो और पप्पाजी-काकाजी के साथ रहो।'*** तब कुछ भी ख्याल नहीं था कि क्या करना है और कैसे करना है। लेकिन बापा का असाधारण प्रेम, बापा का असाधारण वात्सल्यभाव, काकाजी-स्वामिजी द्वारा प्रदत्त योगीजी महाराज के अपरंपार माहात्म्य के कारण निश्चिंतता थी कि बापा हमारे साथ ही हैं और हमें किसी भी प्रकार की तकलीफ नहीं होगी।

१३ मई '६६ में बापा ने मुझे अमदावाद बुला कर कहा था कि–

तुम्हें भगवा कपड़े नहीं देने। भागवती दीक्षा नहीं, लेकिन हृदय भगवा करना है। जैसे साधु संसार और घर-बार छोड़ देते हैं, उसी प्रकार घर-बार छोड़ कर इन्हीं कपड़ों में भगवान भजने हैं। काकाजी और पप्पाजी के साथ रहना है।

यह आदेश देकर बापा ने भेजा।

पर, ख्याल नहीं था कि किस प्रकार भगवान भजने और क्या करना है। उस दिन गुरुवार की सभा में - पोषीपूर्णिमा के दिन पप्पाजी और काकाजी ने कहा–

'आज व्रत लें कि प्रभु के होकर जीना है और प्रभु प्रसन्न हों, इसी भाव से सारी प्रवृत्ति करनी हैं।'

बस, उनका आदेश यह मिला; उस सभा में व्रत दिया। **तब से व्रतधारी भाइयों की नई शाखा की शुरुआत हुई। वह पोषीपूर्णिमा का मंगलकारी दिन था।** वह दिन मनाने के बाद गुरुवार की सभा में युवक बढ़ते गए, दीक्षा लेते गए।

बा का वात्सल्यभाव असाधारण था। बापा का जो वात्सल्यभाव था, वैसा ही भाव बा द्वारा सभी लड़कों को मिला। पप्पाजी की ऐसी असाधारण उष्मा मिली थी, तभी तो लड़कों ने संसार छोड़ा। उन्हें तनिक भी महसूस नहीं हुआ कि उन्होंने घर-बार छोड़ा है। हँसते-खेलते हुए सहजता से प्रभु के मार्ग पर अग्रसर होते गए। फिर **पप्पाजी** ने कहा–

'तुम कर्मयोग करो, जगत यानि–सांसारिक मोह, माया, काल, कर्म तुम्हें कुछ नहीं कर पाएंगे।'

इसी आदेश और आशीर्वाद के साथ साधक भाई अब भगवान में रह कर कर्मयोग कर रहे हैं।

हम देखते हैं: अश्विनभाई, शांतिभाई, रतिभाई, सनंदभाई, हर्षदभाई, पूनमभाई जैसे साधुओं की हमें भेंट मिली। बाद में जब विद्यानगर का स्थान छोटा पड़ने लगा, तो पप्पाजी और बा की आज्ञा, प्रेरणा और आशीर्वाद से इस स्थान में रहने के लिए आए और अब सभी इकट्ठे होकर आनंदकिल्लोल कर रहे हैं।

हम भजन-प्रार्थना करें तो जीवन में ऊँचाई प्राप्त होनी चाहिए; निर्दोषभाव और दिव्यभाव बढ़ना चाहिए। यह न हो तो (अपने आपको) चॅक करना। **काकाजी** कहतेः ***स्टॉप धी इंजिन।*** दोषबुद्धि से युक्त भजन करेंगे, तब तक वह भजन काम नहीं करता। इस **माईक की क़ीमत तब तक है जब तक इलेक्ट्रिकसीटी के साथ जुड़ा हुआ है।** माईक के साथ की पावर कट हो जाए तो हम यही कहेंगे कि इस भूंगले को एक ओर रख दो। **भगवान के साथ का तार जोड़ कर भजन करने से ताक़त प्रगटती है। भगवान के साथ का संबंध तभी टूटता है जब हम दोष देखने लगते हैं, विपरीतभाव में जाते हैं, मनुष्यभाव लेते हैं।** यह टालने के लिए (हम) सुरुचि रखें कि मुझे यह नहीं चाहिए।

जहाँ प्रभु को भूलते हैं, वह मानो 'विषय' हो गया। प्रभु को रख कर जो करेंगे, वह 'विषय' नहीं है। हर एक को यह ढूँढ़ लेना चाहिए कि किस जगह–'कहाँ मैं अपने प्रभु को भूल जाता हूँ।' इस बात का ध्यान रखते हुए जब भजन-प्रार्थना का बल लेंगे, तो हमारा जीवन सर्वांग सुंदर – प्रभु को जँचे ऐसा होगा। हम प्रभु की प्रसन्नता के पात्र बन जाएंगे।

('गुणातीत ज्योत' पत्रिका के सौजन्य से)

✡✡✡

रामनौमी – श्रीजी महाराज का अवतरण!

स्वामिनारायण संप्रदाय के आश्रित मुक्तों के लिए 'रामनौमी' का शुभ दिन तो मानो अखंड सौभाग्यवान होने, आशिष प्राप्त करने का दिन! जीवों का आत्यांतिक कल्याण करने के लिए भगवान श्री स्वामिनारायण ने छपैया गाँव में जन्म लिया। कोमल काया से युक्त ११ वर्ष की आयु में गृहत्याग किया और अठारह वर्ष की आयु तक अकेले, बिना किसी साधन के, नंगे पाँव, केवल कोपीन धारण किए हुए सर्दी-गर्मी-बरसात को सहते हुए अत्यंत कठिन परिस्थितियों में पदयात्रा की। उनका यह असहनीय विचरण उनके अतिदिव्य स्वरूप की प्रतीति तो करवाता ही है, साथ ही अंतर को झंझोड़ देता है कि पूर्ण पुरुषोत्तम स्वरूप ने अपने आश्रितों के कल्याण हेतु कितने कष्ट झेले, जबकि हमें तो वे हँसते-खेलते, आनंद कराते हुए अपने संतों द्वारा सहज प्राप्त हो गए।

इस वृत्तान्त का दर्शन विश्व-वंदनीय, **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामिजी महाराज** ने 'मिस्टीक इंडिया' में बखूबी करवाया है। जो भी एक बार 'मिस्टीक इंडिया' में नीलकंठ वर्णी के रूप में श्रीजी महाराज के दर्शन करके आता है, वह भीतर से तो रो ही पड़ता है कि अहो! प्रभु ने कैसे यह सब झेला... इस दर्शन से मानवचेतना युगों-युगों तक 'बॅप्स' की ऋणी रहेगी।

हम अपनी सीमित दृष्टि से ऐसे प्रभु का क्या उल्लेख कर पाएँगे। हाँ, यदि उनके द्वारा जारी संत पंरपरा के वारिसदारों द्वारा समय-समय पर व्यक्त की गई अद्‌भुत महिमा के प्रवाह में गोता लगाएँ, तो संभवतः समझ पाएँगे। इसी हेतु उनके द्वारा भेंट रूप में मिले **प.पू. काकाजी** द्वारा **रामनौमी** के निमित्त की कथावार्ता से उनकी सच्ची महिमा के प्रवाह में खुद को डुबाते हुए हम अपने भाग्य को सराहें कि मुफ्त में हमें क्या प्राप्ति हो गई!

पृथ्वी के पटल पर मंगलप्रभात का सूर्योदय यानि– 'रामनौमी का दिन'! रसघन मूर्ति श्री सहजानंदस्वामी ने इस दिन प्रगट होकर, मानवजाति को सदैव के लिए सनाथ बना कर, अखंड सौभाग्यवान रखा। प्रगट प्रभु या प्रगट प्रभु के संत से संबंध के बिना –

* कोटि कल्प में भी आत्यंतिक कल्याण नहीं हो सकता,
* त्रिकाल में भी जीवन में से होली टल ही नहीं सकती,
* उद्वेग से अखंड बनी अस्मिता का प्रलय हो सकता ही नहीं,
* संसार के महारण में सहज ठंडक हो ही नहीं सकती।

लेकिन, महाराज ने दया करके – करूणा करके – सतत विचरण करके- एकांतिक धर्म की शाश्वत् पुष्टि करने हेतु सर्वोपरि मंदिर, सर्वोपरि शास्त्र और **एकांतिक धर्म के ज्योतिर्धर प्रगट संतों की एक अमर विरासत** पृथ्वी पर रख दी...

साथ ही साथ, जेतलपुर के चौथे वचनामृत में एक बात बहुत स्पष्ट और खुल्ली की कि काल, कर्म और माया के नियंता ऐसे मेरा – '**पुरुषोत्तमनारायण**' का पृथ्वी पर संबंध हुआ, फिर भी हरिभक्त दुःखी क्यों? जैसे सूर्य के सम्मुख अंधेरा नहीं टिक सकता, वैसे ही भगवान का आश्रित त्रिकाल में भी उद्वेग में जा ही नहीं सकता... तो, आज हमारे जीवन में ज्वार-भाटे, होली-दीवाली के जो द्वंद्व बने रहते हैं, उनका मूलभूत कारण यही है कि महाराज की शिक्षापत्री और महाराज के परम भागवत संत को हमने अपने जीवन में स्थान नहीं दिया है। शिक्षापत्री और संत का स्थान जिसके जीवन में हो या उनमें अटूट विश्वास रख कर जो जीवन जीता हो – ऐसा कोई भी

हरिभक्त संसार के भयंकर दावानल में भी हृदय में परम शांति अनुभव करेगा ही, क्योंकि उसे समर्थ 'स्वामी' मिला है।

अब रामनौमी का शुभ दिन आ रहा है। उन श्री हरि की मंगलकारी मूर्ति अभी भी पृथ्वी पर से गई नहीं है। वह मूर्ति संतस्वरूप में प्रगट है, है और है ही। तो, ऐसे परम भागवत संत को पहचान कर, उनके पास मन छोड़ कर, सच में यदि ओत-प्रोत हो जाएंगे, तो ऐसे संत हमारा अहंभाव और ममता का अज्ञान टाल कर, प्रभु के पनौते पुत्र बना कर, अक्षरधाम के सच्चे सुख का भोगी बना देंगे।

अहंता और ममता ही जीव का मूलभूत अज्ञान है। उसी के कारण ही संसार में क्लेश है। सारा संसार इनसे कलुषित है। अहंता और ममता का विसर्जन कोटि कल्प में भी संभव नहीं है। इंद्रियों-अंतःकरण के जड़ भाव भगवान की मूर्ति का ध्यान करने ही नहीं देंगे... लेकिन, इस क्षुद्रता में से अक्षरब्रह्म की दृष्टि को पाने के लिए, सहजानंदस्वामी ने हमारे लिए खूब आसान मार्ग-संतमार्ग-खुल्ला कर दिया है। वच. अत्यं. ७ और ११ में महाराज के कहे मुताबिक संसार में रहने के बावजूद भी, हम प्रवाह बदल कर–उसे थोड़ा ही मोड़ देकर भगवान और भगवान के भक्तों के साथ प्रीति करके यदि उठाव लेंगे, सुहृद्‌भाव से वर्तेंगे, एक-दूजे के दास होकर सेवा करेंगे, तो उपरोक्त बात को शक्य होने में देरी नहीं लगेगी।

महाप्रभु ने जो करुणा बरसाई है, उस करुणासागर में स्नान करने का बल-बुद्धि और शक्ति स्वामिश्रीजी और प्रगट स्वरूप सभी को दें यही चाहना...

(प.पू. काकाजी महाराज की कथावार्ता में से...)

✡✡✡

४ मई... प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के प्राकट्य पर्व पर!

४ मई यानि–दिव्य विभूति **प.पू. हरिप्रसाद-स्वामिजी** का प्राकट्य दिन! हम सभी जानते हैं कि स्पाईन का ऑपरेशन होने के कारण प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी को डॉक्टरों ने पूर्ण रूप से आराम करने के लिए कहा है। अभी हाल ही में प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के अमृत महोत्सव निमित्त हम 'सांकरदा' गए। तब, वहीं से प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के दर्शन करने के लिए 'हरिधाम' जाना हुआ। प.पू. गुरुजी जब प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के दर्शन के लिए कमरे में गए, तब प.पू. गुरुजी ने उन्हें बताया कि दिल्ली से कुछ मुक्त भी उनके दर्शन करने के लिए साथ में आए हैं। यह सुन कर प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी न केवल दर्शन देने के लिए बाहर हॉल में आए, बल्कि खड़े रह कर उन्होंने माईक पर आशिष प्रदान किए... यह देख कर आँखें नम हो गईं कि ऐसी अवस्था में भी संबंध वाले मुक्तों का ऐसा जतन! सो, उनके प्राकट्य पर्व पर उन्हें एवं भगवान स्वामिनारायण तथा सभी गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में यही याचना कि वे स्वास्थ्य लाभ लेकर हमें अपने दर्शन, सेवा, समागम का खूब लाभ देते रहें।

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के रूप में हमें क्या प्राप्ति हुई है, वो तो हमारी मायिक बुद्धि आंक नहीं पाएगी, पर जब अक्षरधाम की 'दिव्य विभूति' **प.पू. काकाजी** ने ही मोहर लगा दी, तब सहज ही जान पाए कि अहो! कैसी विभूति मिली है। आज से **३५ वर्ष पहले** ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज ने प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के प्राकट्य दिन निमित्त श्री अक्षरपुरुषोत्तम सत्संग पत्रिका में जो आशिष लिखे थे, वे हमें उनकी महिमा का सम्यक् दर्शन कराते हैं... उन्हें झेलने को तत्पर रहें।

स्वामिश्रीजी सत्य है।　　　　२५.४.१९७५

सद्‌गुरु शब्दातीत परम प्रकाश है................. जाके शरण जाए अविद्या नाश है !

पशुवृत्ति में से मानवीय दिव्य-दृष्टि में विकास पाती वृत्तियाँ मिश्रितभाव से युक्त होने के कारण,
अनेक अवतार और धर्माचार्य प्रकट होने के बावजूद जीवन समृद्ध, समग्र, स्वतंत्र और निर्दोष नहीं बना।
विज्ञान और धर्म के विकास में रॉकेट एवं बैलगाड़ी जितना फर्क रहा...
धर्म में मनुष्य की दौड़ अज्ञानमय मन से उल्टे रास्ते ही चली
और
सच्चे सद्‌गुरु को पहचान कर (उनसे) अनन्य दिव्य संबंध भी स्थापित नहीं कर पाया!
जबकि, श्री सहजानंदस्वामी ने अत्यंत करुणा करके
साक्षात् वड़वानल समान गुणातीत संत की प्रकट उपासना अखंडित रखी।
ये प्रगट स्वरूप हर एक स्तर पर, हर एक अवस्था में जीवों को उनकी कक्षा से आगे लेकर,
केवल अपने संबंध से ही पवित्र करके, मूल अज्ञान टाल कर परम सुखी करते रहते हैं – अखंड शांति बख़्शते हैं।
प.पू. ब्रह्मस्वरूप **स्वामिश्री हरिप्रसादजी** गुरुदेव योगीजी महाराज के ऐसे परम कृपापात्र बने हैं
और
आज सूर्य की भांति लौकिक, अलौकिक और आध्यात्मिक भूमिका पर अविरत कार्य करके
प्रत्येक कक्षा पर चैतन्यों को सच्ची शांति, सुख, बल और आनंद देकर,
एक **दिव्य समाज** की जो स्थापना हुई है उसका विकास कर रहे हैं – यह अब सभी जानते ही हैं।
वे एक ऐसे सच्चे सद्‌गुरु हैं,
जो मूल अविद्या को टाल कर, यानि कि –
मायिक पंचविषय के संकल्प और किसी के भी प्रति के अलगाव की दिशा बदल कर,
सभी प्रकार की समस्या का हल निकाल कर, जीवन को प्रभुमय बना कर
साधक की पात्रता के मुताबिक अपने जैसे यानि –
पारस से पारस भी बना सकें ऐसी – **असली नैसर्गिकी** ब्राह्मीस्थिति उन्हें सहज ही सिद्ध है।
तो... उनकी इस ४२वीं जन्मजयंती के दिन हम सभी –
उनके भीतर – उनके स्थूल व्यक्तित्व के पीछे – सहजानंदस्वामी की जो परम चेतना काम कर रही है,
उसे खुल्ले दिल से निहारें – अनुभव करें
और
उनके व्यापकदर्शन करके हृदय में उस दिव्य भावना को प्रकट करके सदैव सुखी हों।
स्वरूपलक्षी सुहृद्‌भाव की प्याऊ सभी बहाते रहें – यही उनकी जन्मजयंती मनाने का परम फल है
और...
ऐसी दिव्य एकता सामुदायिक रूप से काम करती रहे, यही उनकी अनुपम कल्याण योजना है।
तो उसके हम सहभागी बनें और उन्हें कभी मोहताज़ न करें ऐसा दृढ़ संकल्प रख कर,
उनके चरणों में विनम्रभाव से शीश झुका कर, दीनता उच्चारें
और
उनके अंतर की प्रसन्नता प्राप्त करके उनके हृदय में हमारा अद्वैत और अविचल स्थान बनाएँ –
यही प्रभुचरणों में अंतर से प्रार्थना।

लि. सत्संग सेवक
दादुकाका के हेतपूर्वक सभी की ओर से जय श्री स्वामिनारायण!

મૂળ ગુજરાતી : સ્વામીશ્રીજી સત્ય છે ૨૫.૪.૧૯૭૫

સદ્‌ગુરુ શબ્દાતીત પરમ પ્રકાશ હે....................જાકે શરણે જાય અવિદ્યા નાશ હે

પશુવૃત્તિમાંથી માનવીય દિવ્ય દૃષ્ટિમાં વિકાસ પામતી વૃત્તિઓ મિશ્રિત ભાવવાળી જ રહી હોવાથી
અનેક અવતારો ને ધર્માચાર્યો પ્રકટ થયા હોવા છતાં જીવન સમૃદ્ધ, સમગ્ર, સ્વંતત્ર ને નિર્દોષ બન્યું નહિ.
વિજ્ઞાન અને ધર્મના વિકાસમાં રોકેટ અને બળદગાડી જેટલો ફેર રહ્યો...
માનવીની દોટ ધર્મમાં પણ અજ્ઞાનમય મનથી ઊંધે રસ્તે જ ચાલી
અને
સાચા સદ્‌ગુરુને ઓળખી અનન્ય દિવ્ય સંબંધ પણ થઈ શક્યો નહિ.
જ્યારે શ્રી સહજાનંદસ્વામીએ અત્યંત કરૂણાએ કરીને
સાક્ષાત્ વડવાનળસમા ગુણાતીત સંતની પ્રકટ ઉપાસના અખંડિત રાખી–
કે જે સ્વરૂપ હરેક સ્તર પર, હરેક અવસ્થામાં જીવોને તે તે કક્ષાએથી આગળ લઈ
કેવળ પોતાના સંબંધે જ જીવને પવિત્ર કરી મૂળઅજ્ઞાન ટાળી પરમ સુખીયા કરે, અખંડ શાંતિ બક્ષે.
પ.પૂ. બ્રહ્મસ્વરૂપ **સ્વામિશ્રી હરિપ્રસાદજી** ગુરુદેવ યોગીજી મહારાજના એવા પરમ કૃપાપાત્ર બન્યા
ને
આજે સૂર્યસમાન લૌકિક, અલૌકિક ને આધ્યાત્મિક ભૂમિકાઓએ અવિરત કાર્ય કરી
તે તે કક્ષાએ તે તે ચૈતન્યોને સાચી શાંતિ, સુખ, બળ ને આનંદ અર્પી
એક **દિવ્ય સમાજ**ની સ્થાપનાનો વિકાસ કરતા રહ્યા છે – તે હવે સૌની જાણમાં જ છે.
આવા સાચા સદ્‌ગુરુ મૂળઅવિદ્યાને ટાળી, એટલે કે–
માયિક પંચવિષયના સંકલ્પો અને કોઈનાય તરફના ભાવફેરની દિશા બદલી
સર્વ પ્રકારનાં સમાધાનો કરી, કેવળ પ્રભુમય જીવન બનાવે ને
સાધકની પાત્રતા પ્રમાણે પોતા જેવા
પારસથી પારસ પણ બનાવી શકે – એવી **અસલી નૈસર્ગિકી** બ્રાહ્મીસ્થિતિ તેમને સહજ જ સિદ્ધ છે.
તો... તેમની આ ૪૨મી જન્મજયંતિ દિને આપણે સૌ
તેમની ભીતર – તેમના સ્થૂલ વ્યક્તિત્વ પાછળ સહજાનંદસ્વામીની જે પરમ ચેતના કામ કરી રહી છે
તેને ખુલ્લા દિલે નિહાળીએ – અનુભવીએ
ને
તેનાં વ્યાપકદર્શન કરી હૃદયમાં તે દિવ્ય ભાવનાને પ્રકટ કરી સદા સુખિયા બનીએ.
સ્વરૂપલક્ષી સુહૃદ્‌ભાવની પરબો સૌ વહેવડાવતા રહીએ એજ તેમની જન્મજયંતી ઊજવ્યાનું પરમ ફળ છે...
અને
એવી દિવ્યએકતા સામુદાયિકરૂપે કામ કરતી રહે એ તેમની અનુપમ કલ્યાણ યોજના છે.
તો, તેનાં આપણે સહભાગી બનીએ ને તેમને કદીય ઓશિયાળા ન કરીએ તેવો દૃઢ સંકલ્પ રાખી–
તેમના ચરણોમાં વિનમ્રભાવે શીશનામી દિનતા ઉચ્ચારીએ
ને
તેમની અંતરની પ્રસન્નતા પ્રાપ્ત કરી તેમના હૃદયમાં આપણું સ્થાન અદ્વૈત ને અવિચળ બનાવીએ
એજ પ્રભુચરણે અંતરથી પ્રાર્થના સહ

લિ. સત્સંગ સેવક
દાદુકાકાના હેતપૂર્વક સર્વના વતી જય શ્રી સ્વામિનારાયણ.

सांकरदा की धरती पर साकार भयो 'अक्षर के तेज' का अमृतपर्व !

गुणातीत स्वरूपों एवं ज्योतिर्धरों की निश्रा में समग्र गुणातीत समाज के मुक्तों ने **१५ फरवरी** के दिन **सांकरदा** में **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** का अमृत उत्सव खूब हर्षोल्लास के साथ मनाया। प.पू. गुरुजी भी करीब २५-३० मुक्तों के साथ १५ फरवरी की सुबह वहाँ पहुँच गए... प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेबजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई एवं पू. कोठारीस्वामिजी ने फूलों एवं रंगों से सुशोभित बग्गी में विराजमान होकर सभामंडप में प्रवेश किया। सभी मुक्तों ने तालियों की गड़गड़ाहट से इन दिव्य विभूतियों का स्वागत किया। सभा के प्रांरभ में ही संतों द्वारा निर्मित तीन हंसों द्वारा प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेबजी एवं प.पू. दिनकरभाई के पास 'केक' पहुँचना विशेष आकर्षण लिए हुए था। प.पू. दिनकरभाई ने तो अपने आशीवर्चन में यहाँ तक कह दिया–

इस उत्सव में हुई कथावार्ता भले ही किसी को याद न रही हो, पर तीन हंसों द्वारा सभा में केक ले आने का नज़ारा तो हर एक को याद रह जाएगा और ऐसी स्मृतियाँ ही हमारी चेतना का श्रेय कर जाती हैं।

मंच पर उपस्थित स्वरूपों एवं संतों ने मिल कर केक का प्रसाद सभी को भिजवाया। तत्पश्चात् सभी स्वरूपों एवं संतों को हार अर्पण करके उनका स्वागत किया गया। पू. योगेशभाई, पू. कौशिकभाई, पू. दिनकरभाई देसाई जैसे मुक्तों ने प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के प्रति अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हुए आशिष याचना की...

हरिधाम, गुणातीत ज्योत, अनुपम मिशन, पवई, दिल्ली, शिकागो इत्यादि सभी केन्द्रों के मुक्तों की ओर से प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी को प्रार्थना रूप हार व भेंट अर्पण की गई।

प.पू. दिनकरभाई को कोटि-कोटि धन्यवाद कि १० दिन के अंतराल पर ही इसी उत्सव के हेतु शिकागो से पुनः भारत आए।

गुरुहरि योगीजी महाराज के सूत्र–'संप, सुहृद्भाव और एकता' के सिद्धांत को मद्देनज़र रखते हुए सभी स्वरूपों एवं वडील संतों ने प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के माहात्म्य का दर्शन करवाया। गुरुहरि योगीजी महाराज के अंतर की प्रसन्नता प्राप्त किए हुए इस अनुपम विभूति की भक्ति का सभी ने अभिनंदन किया। दोपहर करीब दो बजे तक माहात्मय की गंगा में सभी ने स्नान किया और महाप्रसाद लेकर तृप्त हुए...

✡ ✡ ✡

Statement about ownership and other particulars about newspaper —

'भगवत् कृपा' (Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society, 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
2. Periodicity of its Publication	:	Bi-Monthly
3. Printer's Name	:	Prabhaker Rao
4. Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
5. Publisher's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
6. Editor's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
7. Owner's Name	:	Yogi Divine Society
Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52

I, Prabhaker Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
PRABHAKER RAO
Signature of Publisher

Date: 3 March, 2011

निमंत्रण

आओ ! आओ ! ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साक्षात्कार हीरक जयंती वर्ष में
13 मार्च 2011 – रविवार की सायं 5:00 बजे से
योगी परिवार के हम सब इकट्ठे होकर,
हमारे प्यारे-प्यारे एवं भजनीक प.पू. गुरुजी का 74वाँ प्राकट्य दिन
प्रत्यक्ष स्वरूपों की निश्रा में 'योगी परिवार आनंदोत्सव' के रूप में मनाएँ !

इन्दु मल्कानी
(गुणातीत कुनबा, दिल्ली)

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	**5.3.2011,**	शनिवार	—	**प.पू. गुरुजी की प्रागट्य तिथि**
(2)	दि.	**7.3.'11,**	सोमवार	—	**ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्वधामगमन की रजत जयंती**
(3)	दि.	**13.3.'11,**	रविवार	—	**प.पू. गुरुजी का 74वां प्रागट्य दिन**
					(सायं 5:00 बजे से ताड़देव मंदिर – दिल्ली में मनाया जाएगा।)
(4)	दि.	16.3.'11,	बुधवार	—	एकादशी, व्रत
(5)	दि.	19.3.'11,	शनिवार	—	होली, होलिका दहन, **ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज का जन्मोत्सव**
(6)	दि.	20.3.'11,	रविवार	—	धुलेन्डी, *दिल्ली मंदिर में* ***चंदनोत्सव सुबह 8:30 बजे से...***
					प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. साहेब की प्रागट्य तिथि
(7)	दि.	30.3.'11,	बुधवार	—	एकादशी, व्रत
(8)	दि.	4.4.'11,	सोमवार	—	गुडी पड़वा
(9)	दि.	12.4.'11,	मंगलवार	—	रामनौमी, **भगवान श्री स्वामिनारायण जयंती**, व्रत
(10)	दि.	14.4.'11,	गुरुवार	—	एकादशी, व्रत
(11)	दि.	16.4.'11,	शनिवार	—	गुरुहरि योगीजी महाराज का दीक्षा दिन
(12)	दि.	18.4.'11,	सोमवार	—	पूर्णिमा, श्री हनुमान जयंती
(13)	दि.	28.4.'11,	गुरुवार	—	एकादशी, व्रत
(14)	दि.	4.5.'11,	बुधवार	—	**प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का प्राकट्य दिन**
(15)	दि.	6.5.'11,	शुक्रवार	—	अखात्रीज
(16)	दि.	7.5.'11,	शनिवार	—	गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की अंतर्धान तिथि
(17)	दि.	14.5.'11,	शनिवार	—	एकादशी, व्रत
(18)	दि.	16.5.'11,	सोमवार	—	नृसिंह जयंती, फलारी व्रत

R.N.I. 28971/ 77
Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052